दिसम्बर 2009 ▪ Rs.20/-

चन्दामामा

Visit : www.chandamama.com/parle

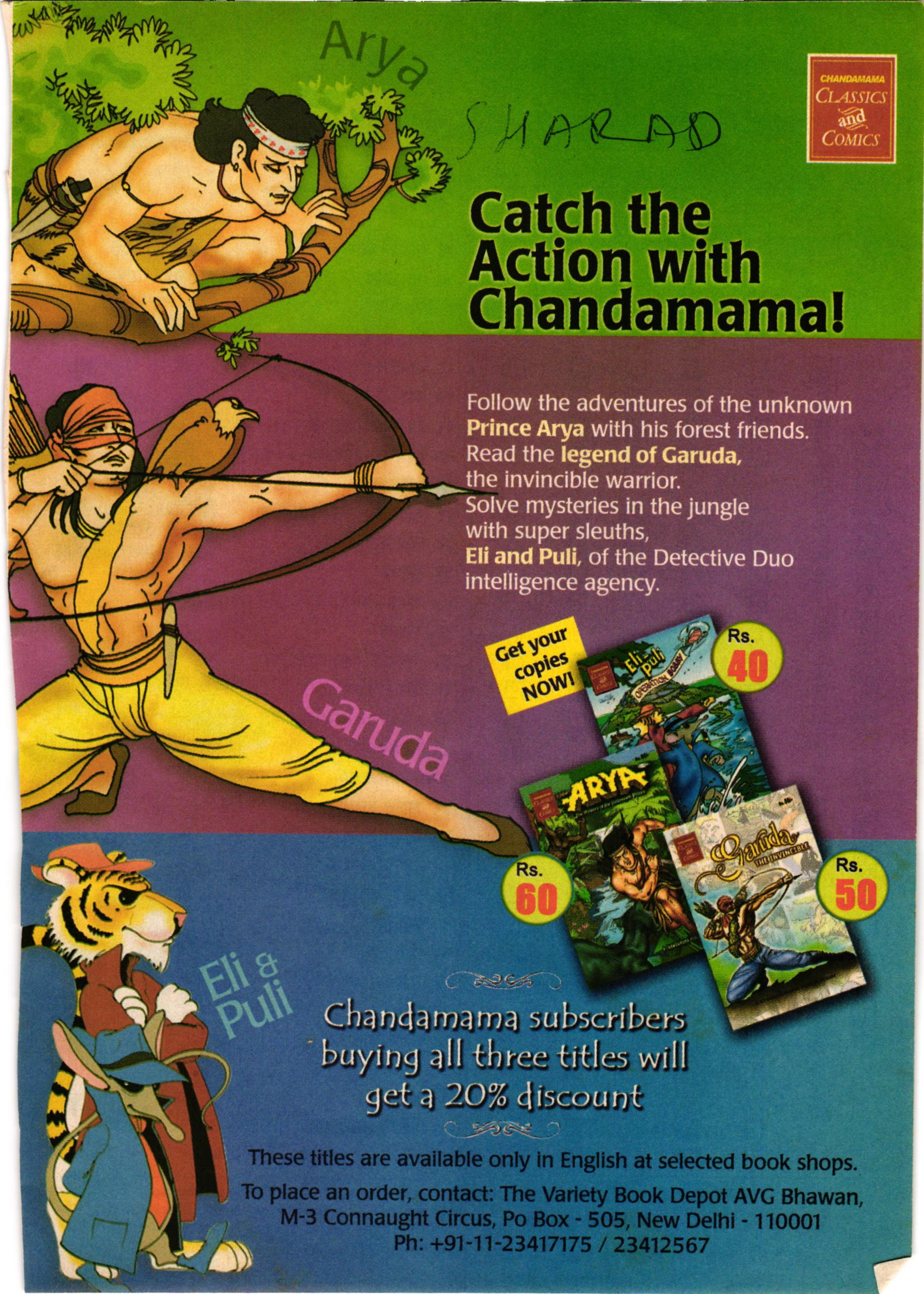
Arya
SHARAD
CHANDAMAMA CLASSICS and COMICS
Catch the Action with Chandamama!
Follow the adventures of the unknown **Prince Arya** with his forest friends. Read the **legend of Garuda,** the invincible warrior. Solve mysteries in the jungle with super sleuths, **Eli and Puli**, of the Detective Duo intelligence agency.
Get your copies NOW!
Eli Puli
Rs. 40
ARYA
Rs. 60
Garuda
THE INVINCIBLE
Rs. 50
Garuda
Eli & Puli
Chandamama subscribers buying all three titles will get a 20% discount
These titles are available only in English at selected book shops.
To place an order, contact: The Variety Book Depot AVG Bhawan, M-3 Connaught Circus, Po Box - 505, New Delhi - 110001
Ph: +91-11-23417175 / 23412567

सम्पुट-६० दिसम्बर २००९ सञ्चिका-१२

नाम.. आयु........

पता..

....

....

फोन.................. ई-मेल..

अपनी पत्रिका का मूल्यांकन कीजिए!

विषय के पार दी गयी बॉक्स को टिक कीजिए, बिन्दु रेखाओं से काटिए और अपना फीडबैक हमें भेजिए।

उत्कृष्ट	सर्वोत्तम	बेहतर	अच्छा	सामान्य
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐

चन्दामामा इण्डिया लिमिटेड,
२/५१३, संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेन रोड,
चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.

H

अंतरंग

चन्दामामा

०६ पाठकों का पन्ना
०७ क्रिसमस का द्वेषनिराकरण (क्रिसमस)

क्लासिकी

०८ सिंह मित्र (हिमाचल प्रदेश की लोक कथा)
११ आह्वान (वेताल कथा)
१७ आर्य-२
२१ रामायण (युद्ध काण्ड)
२७ मित्र भेद (पंचतंत्र की कथाएँ)

क्रियाकलाप

३१ चित्र कैप्शन प्रतियोगिता
३२ तेज़ फार्मूला
३३ यूरेका
३४ चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-११

लघु कथाएँ

३५ गैरहाज़िरी का समझौता
३९ निराई की मज़दूरी
४३ गद्दी का असली हकदार
४६ ज़िम्मेदारी

भारत निर्देशिका

४९ भारत दर्शक
५० धरती पर स्वर्ग
(इतिहास के पन्ने)
५४ चूँ चूँ का डिब्बा

धारावाहिक

५६ पाताल दुर्ग
६२ कृतज्ञ (अनुनिर्वा)

समाचार

६८ उदीयमान सितारा
६९ समाचार झलक

विविध

७० हँसते-हँसते हो जा लोटपोट
७१ एक सवलिया सवाल (हास्य-कथा)

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

२०१० में पदार्पण

हैलो दोस्तो!!!

हम इस वर्ष की समाप्ति की ओर खिसक रहे हैं। जैसे ही हम पीछे की ओर देखते हैं तो हमें अहसास होता है कि समय कितनी तेज़ी से उड़ता है! पिछली जनवरी को हमने बहुत सी प्रतिज्ञाएँ ली थीं और अब समय है यह देखने का कि हम अपने वादों पर कितने खरे उतरे। बहुत अधिक तो नहीं...

यद्यपि हमें अपना दिल छोटा नहीं करना चाहिए परंतु अपने मानदण्ड आप सुनिश्चित करके स्वयं को सुधारने हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए। ''काइज़ैन'' कहलाए जानेवाले इस प्रकार के अनवरत सुधार के सिद्धान्त ने जापानी कंपनियों को विश्वस्तरीय बनाने में बड़ी मदद की। हम ऐसे सिद्धान्तों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

हम आपके द्वारा इस वर्ष ली गई विभिन्न प्रतिज्ञाओं के बारे में आपकी मेल द्वारा जानने के लिए उत्सुक हैं और यह जानने के लिए भी कि उन प्रतिज्ञाओं का क्या हुआ। क्या आप अपने वादे पर स्थिर रहे या डिग गए? और यह भी कि आगामी वर्ष के प्रारंभ में आप क्या प्रतिज्ञा लेना चाहेंगे?

यह महीना अंतर्राष्ट्रीय दिवसों से भरा हुआ है- विश्व एड्स डे, सिविल एविएशन डे, ह्यूमन राइट्स डे...हम सब के लिए एक पुनःस्मरण मात्र के लिए कि ये क्रियाकलाप हमारे रोज़ के जीवन में कितने महत्वपूर्ण हैं अन्यथा हम तो इन्हें यूँ ही जाने देते।

महीने की समाप्ति पर क्रिसमस आता है- जीसस क्राइस्ट का जन्म दिवस। भारत में हम सभी इस प्रकार के खुशी के पल बराबर धूमधाम से मनाते हैं।

कृपया हमें लिख भेजिए और बताइए कि आपने नव वर्ष में किस प्रकार प्रवेश का निश्चय किया है। हम अपने सभी पाठकों से उम्मीद करते हैं कि वे हमें अपने अनुभव कहानियों, चित्रों तथा कविताओं आदि के माध्यम से लिख भेजें जिससे कि पत्रिका सदैव अपने विशिष्ट पाठकों का सानिध्य पा सके। हमारी ओर से हमने नववर्ष की प्रतिज्ञा इस प्रकार लेने का विचार किया है कि हम एक कालांतर पर जाँचते रहेंगे कि हम अपना कार्य पूर्ण करने में कहाँ तक कामयाब हुए। ***- संपादक***

दिसम्बर २००९ Rs.20/-
Founded by B. Nagi Reddi and Chakrapani

Editor & Publisher : Prashant Mulekar
Associate Editor : Sowmya Rajendran
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : T. Venkatesan
Asst. Editor-Copy & Pre-Production : R. Sudha
Creative Writer : R. Vaasugi, R. Rama
Layout Designers : B. Thirumal, K. Narendra
Sanjay B Thorat : *Head - Sales and Circulation*
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Mobile +91 9821017787
email : sanjay.thorat@chandamama.com
Rajendra K Jadhav : *Asst. Manager - Circulation*
Mobile +91 9320565048
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
***New Delhi :* Sushil Sharma**
Circulation Manager-North,
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
Goyal Business Centre, C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Mobile +91 99110 91022
Bangalore :
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street, Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage, Bangalore-560094,
Phone +91 80 6655 1000
Chennai :* K. Ravishankar, *Sales Officer - Circulation, Mobile +91 98414 00981
email : ravishankar.k@chandamama.com
***Business Development :* Ananth Prakash**
Mobile +91 98362 82202, 98351 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
***Content Head - Online :* Sowmya Bharadwaj**
email : online@chandamama.com
Marketing Enquiries :
email : marketing@chandamama.com
Advertisement :
email : sales@chandamama.com
Subscription Queries:
e-mail : subscription@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam
Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Production Executive : Panchakshari R Math
***Head Office :* CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
2/513 (Old 3/396), Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelankarai, Chennai - 600 041 Phone +91 44 43992828, Fax +91 44 43992829
Email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Printed and Published by Prashant Mulekar at Shruti Art Pvt. Ltd., Unit No.1, Gupta Mills Estate, Devidayal Industrial Compound, Darukhana, Reay Road (East), Mumbai - 400 010 on behalf of Chandamama India Limited, 2/513, Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Thiruvanmiyur, Chennai - 600 041. Editor : Prashant Mulekar

पाठकों का पन्ना

मुझे यह पत्रिका बहुत प्रिय है। इसकी सभी कथाएँ अच्छी लगती हैं। परन्तु ''पाताल दुर्ग'' सबसे अच्छी लगती हैं। मेरा यह नम्र निवेदन है कि यदि इसमें ''अलिफ लैला'' की कहानियाँ भी प्रकाशित किया जाये तो बहुत अच्छा होगा। ***- भावेश शास्त्री, गुजरात***

चन्दामामा में प्रकाशित पौराणिक कहानियाँ अपने आप में आदर्श है, मुख्यतः अगर हम देखें तो बचपन में पढ़ने की रुचि हमें *चन्दामामा* ने ही दिलाई। *चन्दामामा* राष्ट्रीय पत्रिका है इसलिए इसमें हर प्राँत, राज्य की कहानियाँ प्रकाशित होती हैं। विदेशी ही नहीं अपने देशवासी भी भारतीय संस्कारों से ओत-प्रोत कहानियाँ पढ़कर भारतवर्ष को और भी करीब से जानते हैं। इसलिए हमारी *चन्दामामा* को शतः शतः धन्यवाद। जय हिंद ! ***- राहुल पाडवी, नंदुरबार***

चन्दामामा वास्तव में एक संपूर्ण पत्रिका है। जहाँ अन्य पत्रिकाएँ मनोरंजन के नाम पर बच्चों को अनावश्यक सामग्री परोस रही हैं, वहाँ *चन्दामामा* हमें मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन हेतु शुद्ध सांकल्य प्रदान करती है। विविध वर्णपूरित चित्र कथाओं के तथ्य को हृदयगम करने का एक सशक्त माध्यम है, इसी तथ्य को ध्यान में रखकर *चन्दमामा* में सुन्दर एवं आकर्षक चित्रकथाओं का प्रयोग किया गया है। *चन्दामामा* पत्रिका वास्तविक अर्थों में सांस्कृतिक उच्च मूल्यों एवं परम्पराओं की सच्ची संवाहिका है। जातक-कथा को चित्रकथा में प्रकाशित करना बहुत ही अच्छा लगा। कुछ अन्य कथाएँ भी चित्रकथा के रूप में प्रकाशित करें, ऐसी मेरी प्रार्थना है। मैं *चन्दामामा* की अहर्निश उन्नति एवं सफलता हेतु ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

- राजकुमार आर्य, सिरोही

चन्दामामा का नया रूप बिल्कुल पसन्द नहीं है। इसका पुराना रूप ही अच्छा था। ***- एस एम एस द्वारा अदिति, बिहार***

आप अपना विचार
feedback@chandamama.com
पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं अथवा MLANG <space> <Name, Age> <space> <HIN your feedback> लिखकर 54646 को SMS भी कर सकते हैं।

क्रिसमस का द्वेषनिराकरण

सन् १९१४ बेल्जियम में प्रथम विश्व युद्ध अपने पूरे आवेग पर था। पूरा क्षेत्र बर्फ की मोटी तह से ढका हुआ था। ब्रिटिश तथा जर्मन सेनाएँ अपनी-अपनी खंदकों में छिपी थीं। खंदकें मात्र सौ मीटर की दूरी पर थीं और ब्रिटिश सेनाएँ आश्चर्यचकित रह गईं जब उन्होंने जर्मन सैनिकों को एक कैरोल गाते सुना। उन्होंने सावधानी से अपनी खंदकों से बाहर झाँका। जर्मनों ने एक क्रिसमस ट्री रौशनियों से सजाया हुआ था। ऐसा कुछ जो जंग के मैदान में बिल्कुल उम्मीद से परे था।

ब्रिटिश सैनिकों ने अचानक अपने दिलों को पिघलते हुए महसूस किया। उन्होंने भी क्रिसमस कैरोल गाना शुरू कर दिया! जल्दी ही सैनिक आपस में एक दूसरे को दोस्ताना बधाइयाँ देने लगे। जब दोनों तरफ की सेनाएँ गोलाबारी रोकने को सहमत हो गईं तो वे अपनी-अपनी खंदकों से बाहर आ गए और अपनी वस्तुएँ एक दूसरे को देने लगे- जैम, चॉकलेट, बटन्स तकरीबन सभी कुछ जो उनके पास था। अनाधिकृत क्षेत्र सैनिकों की अद्‌भुत खुशी तथा दोस्ती की गर्मी से भर गया।

इस विशिष्ट क्रिसमस का बाद में इतना शक्तिशाली प्रभाव पड़ा कि बहुत से सैनिक अपने नए बने मित्रों पर गोली नहीं चलाना चाहते थे। सैकड़ों सैनिकों ने अपने घरों पर युद्ध के मैदान में हुए इस अद्‌भुत चमत्कार का वर्णन करते हुए पत्र लिखा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि सैनिक उन लोगों में इन्सान देख सके जिन्हें वे अपना दुश्मन मान बैठे थे।

किसने सोचा था कि विश्व युद्ध तथा क्रिसमस एक दिन मिल पाएँगे? यह एक और उदाहरण है यह बताने का कि एक त्यौहार क्या बदलाव ला सकता है!

आप सभी को क्रिसमस की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ!

हिमाचल प्रदेश की लोक कथा

सिंह मित्र

हिमाचल प्रदेश के लाहुल स्पिती में खूबसूरत पहाड़ियों की परतों में सुरक्षित एक छोटे से गाँव में गड्डी जनजाति वास करती थी वे जीवनयापन हेतु भेड़ पालन किया करते थे।

उस गाँव में राचेन नामक एक लड़का रहता था। वह खुशी छलकाती चमकती आँखों वाला साँवला इकहरे बदन का लड़का था। गाँव के लोग राचेन को प्यार करते थे क्योंकि वह हमेशा हँसता रहता और बहुत ही खुशी के गीत गाता जिन्हें लोग सुनना पसंद करते थे।

अन्य लोगों की तरह राचेन का अपना भेड़ों का झुंड था। वह ऊन बेच कर पैसा कमाता। दो गर्म ऊनी स्वेटर तथा रोज़ खाने के लिए पर्याप्त सत्तू (भूनकर पीसे हुए अनाज) के साथ राचेन एक छोटी सी झोपड़ी में रहता था। वह संतुष्ट था इसीलिए वह खुश था!

उसी गाँव में एक वान्गू नामक आदमी रहता था। वह हमेशा दुखी और उदास रहता था, इससे कोई मतलब नहीं था कि उसके पास कितना है। वह तो और अधिक भेड़ें, और अधिक ऊन, और अधिक भोजन तथा और अधिक पैसा चाहता था। वह जब लोगों के पास से गुजरता तो उन पर त्योरियाँ चढ़ाए रखता और जब कभी वह किसी को ताली बजाते तथा खुश होते देखता तो उसके माथे पर बल पड़ जाते। गाँव में कोई भी उस चिढ़चिढ़े व्यक्ति को पसंद नहीं करता था! और राचेन का अपनी ऊँची आवाज़ में गाना तथा हर समय एक संतुष्टि की मुस्कान से खेलने से अधिक वान्गू को कोई और चीज़ नहीं चिढ़ाती थी। "कोई ऐसा कैसे हो सकता है?" वान्गू अक्सर आश्चर्य करता।

राचेन हमेशा अपनी भेड़ों को अपने गाँव की पहाड़ी की चोटी के मैदान पर ले जाता। एक दिन उसने देखा कि वहाँ उसकी भेड़ों के लिए पर्याप्त घास नहीं है। काफी दूरी पर उसने देखा

Cycle साइकिल மிதிவண்டி Tamil मिदिवण्डि

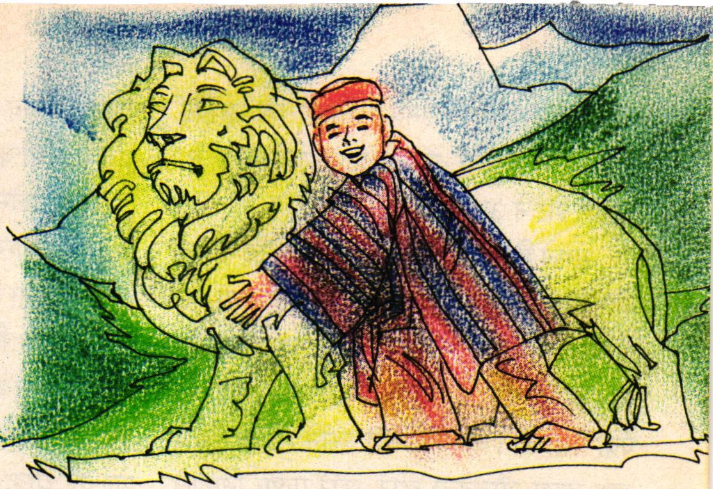

कि वहाँ एक दूसरा घास का मैदान है जोकि इतना हरा दिख रहा था कि मानो पत्ते का मैदान हो! वह इतना दूर भी नहीं लगा।

राचेन ने अपनी भेड़ों के झुंड को पुकारा और एक साथ वे पहाड़ी पार की ओर चल दिए और वहाँ पहुँच कर जल्दी से चरने के लिए जुट गईं। राचेन ने थोड़ा घूम कर देख लेने का निश्चय किया। और जैसे ही वह चला अचानक उसने स्वयं को एक शेर को घूरते पाया, लेकिन अगले ही क्षण उसने ज़ोर से हँसना शुरू कर दिया। क्योंकि वह एक पत्थर का सिंह था लेकिन वह इतनी खूबसूरती से गढ़ा हुआ था कि वह ऐसा लग रहा था जैसे कि वह जीवित हो।

राचेन ने अचानक वफादारी से रक्षा करते अकेले शेर के प्रति एक लगाव महसूस किया। उसने अपनी बाँह शेर के गले में डाली और ऐसे बात की जैसे कि वह उसे बरसों से जानता हो। यहाँ तक कि उसने अपना सत्तू भी उसके साथ साझा किया।

जब भेड़ों को वापस घर ले जाने का समय आया तो राचेन का दिल खुशी से भरा हुआ था। उसने न केवल एक नया घास का मैदान ढूँढ़ा था बल्कि एक नया दोस्त भी पाया था। हर दिन वह अपनी ज़िंदगी के बारे में बात करता और शेर के लिए गाना गाता। वह कभी भी शेर के लिए उसके सत्तू का हिस्सा रखना नहीं भूलता था और हमेशा अगले दिन देखता कि वह गायब है। वह जानता था कि शायद चिड़ियाँ उसे खा लेती होंगी लेकिन उसे यह सोचना अच्छा लगता था कि उसका सिंह मित्र ने इसे एक बार में चाट गया होगा।

अभी अधिक समय नहीं हुआ कि सर्दियाँ शुरू हो गयीं सूर्य अब उतना गर्म नहीं था और रातें अधिक तीखी ठंडी हो गयीं। लोगों ने कुल्लू घाटी की निचली पहाड़ी पर जाने की तैयारी की। राचेन ने भी नीचे जाने का निश्चय किया पर पहले अपने मित्र पत्थर सिंह से मिले बिना नहीं!

उसने शेर को बताया कि अगर वह नहीं गया तो वह जम कर मर जाएगा। फिर उसने आगे कहा, ''ख्याल रखना, आशा करता हूँ कि तुम मुझे याद करोगे!'' राचेन अपनी टिप्पणी पर हँसा। लेकिन वह आश्चर्यचकित रह गया जब शेर ने अपना मुँह चौड़ा कर खोला और दहाड़ा, ''हाँ, मैं सोचता हूँ कि मुझे तुम्हारी बात याद आएगी!''

शेर ने उसे बताया कि वह राचेन को एक उपहार देना चाहता है। उसने उसे एक थैला लाने को कहा और अगले दिन सूर्योदय से पहले जो भी उसके मुँह से निकलता है उसे इकट्ठा करने

Cycle साइकिल সাইকেল Bengali साइकेल

को कहा। राचेन ने इनकार किया कि उसकी आवश्यकतानुसार उसके पास सब कुछ है, लेकिन शेर ने आग्रह किया।

अगले दिन राचेन भूल ही गया कि शेर ने उसे क्या बताया था। लेकिन जब वह जागा तो वह शेर से मिलने भागा। शेर उसका इंतज़ार कर रहा था। जल्दी में राचेन भूल ही गया था कि शेर ने एक थैला लाने को कहा था! उसने शेर के मुँह में हाथ डाला और कुछ छोटे-छोटे पत्थर निकाले और अपनी टोपी भर ली। उसी क्षण सूर्य उदय हुआ और शेर का मुँह बन्द हो गया। राचेन ने जब उस खज़ाने की ओर देखा वह चित्रलिखित

रह गया वे सब सोने के सिक्के थे! आनन्दित राचेन गाँव में सभी को बताने वापस दौड़ पड़ा।

लोग राचेन का अच्छा भाग्य देख कर खुश थे, केवल वान्गू को छोड़ कर। निश्चित रूप से वान्गू जानना चाहता था कि राचेन ने खज़ाना कैसे हासिल किया। मालूम होते ही वान्गू तुरंत शेर को दोस्त बनाने दौड़ पड़ा। उसने मलाई वाला दूध, शहद तथा सत्तू लिया। यहाँ तक कि उसने शेर को याक की पूँछ का पंखा भी झला तथा उससे घंटों बातें कीं।

आखिरकार शेर को उस पर दया आ गई और उसी वादे के साथ खुद को उसके सामने लाया। अगले दिन वान्गू ने सूर्योदय से घंटों पहले वहाँ जाने का निश्चय किया जिससे कि वह सोने के सिक्कों का ढेर इकट्ठा कर सके। और वान्गू एक विशाल थैला और लालटेन ले जाना भी नहीं भूला।

पहाड़ी ओस से भीगी हुई थी और अँधेरा छाया था, लेकिन वान्गू कूदा और चट्टानों पर दौड़ा वह पत्थर शेर के बिल्कुल करीब था और उसके मुँह में सोने के सिक्के देखने के लिए इतना उत्सुक था कि पत्थर उसके पैर के नीचे छूटा और वह पहाड़ी से नीचे लुढ़क पड़ा।

वान्गू को चोट तो नहीं लगी पर उसकी लालटेन छूट गई। वह पहाड़ी पर दूर तक घूमा, खो गया और थक गया। कोई नहीं जानता था कि वान्गू का क्या हुआ! जहाँ तक राचेन का सवाल है वह खुशहाली से जीया और पत्थर शेर के मुँह पर एक अद्भुत मुस्कुराहट खिंची हुई थी।

- रमा रमेश द्वारा पुनर्कथित

वेताल कथा

आह्वान

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल कर यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा, तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, यह सब जानते हैं कि महान कार्यों को साधने के लिए आत्मविश्वास नितांत आवश्यक है। कुछ लोग आत्मविश्वास के नाम पर स्वयं में अहंकार बढ़ाते हैं। शासकों में यह अहंकार प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है। यद्यपि पंडितों में यह बाह्यरूप से दिखाई नहीं पड़ता पर उनके अंतर्मनों यह नाग के समान फन उठाए खड़ा रहता है। तुममें ऐसा अहंकार फन न उठाए अतः तुम्हें सावधान करने के लिए मातंग नामक एक पंडित की कहानी सुनाऊँगा। थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनो।'' फिर वेताल मातंग की कहानी सुनाने लगा।

नागपुर निवासी मातंग और मदन सहपाठी थे। मातंग महापंडित बना और पंडितों की सभाओं में भाग लेते हुए अपार ख्याति पायी। उसे अपने

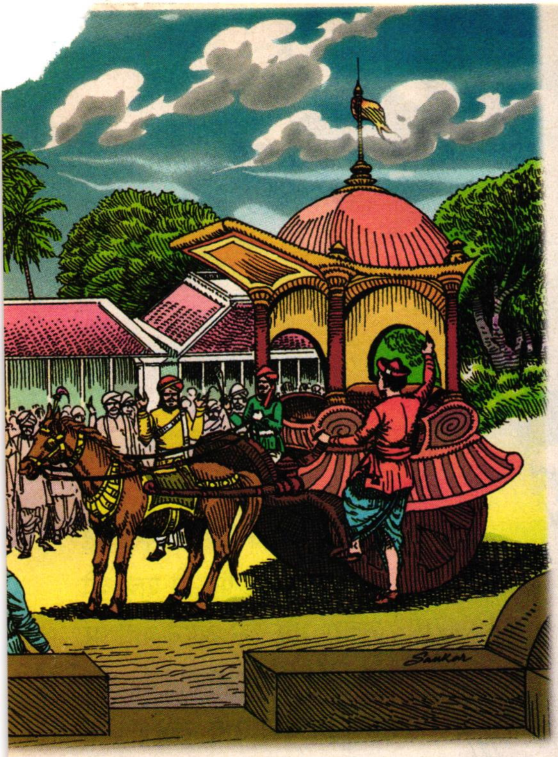

गाँव का निवासी कहते हुए सभी लोग गर्व महसूस करते थे। मदन शास्त्रादि तो पढ़ नहीं पाया पर वह खेती के कार्य में निपुण था। उसने खेती से अपार धन कमाया, परंतु मातंग की भाँति नाम नहीं कमा पाया। मातंग के प्रति यह ईर्ष्या ही उसके दुःख का सबब थी।

उस देश के राजा ने एक बार पंडितों की सभा का आयोजन किया। राजा ने इस सभा में भाग लेने के लिए मातंग को आह्वान पत्र तथा साथ ही उसे ले आने के लिए एक रथ भी भेजा। मातंग इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए राजधानी गया।

यह उस गाँव के लिए प्रतिष्ठा की बात थी। इसलिए ग्रामाधिकारी ने गाँव के सब लोगों को बुलाया और पूछा कि मातंग के लौटने के बाद उसका सत्कार कैसे किया जाए। इसके लिए उसने गाँववालों की सलाहें भी लीं।

मदन को यह बिल्कुल पसंद नहीं आया। उसने सबसे कहा, "पांडित्य हो या विनोद, ये पेट भरने के बाद ही मुख्य हैं। किसान रात-दिन खेत में परिश्रम करता है, किन्तु जनता किसान के महत्त्व की ओर ध्यान नहीं देती। लोग केवल पंडितों व कलाकारों का ही सम्मान करते हैं। उनकी प्रशंसा में लगे रहते हैं। उनकी प्रशंसाओं को सुनकर पंडित और कलाकार स्वयं को श्रेष्ठ मानते हैं और गर्व करने लगते हैं।"

परंतु किसी ने भी मदन की बातों का समर्थन नहीं किया। उल्टे मातंग को विनयशील कहते हुए उसकी और प्रशंसा करने लगे। मदन ने अपनी हार न मानते हुए जनता के सामने एक प्रस्ताव रखते हुए कहा, "मातंग का सत्कार कैसे हो इसी पर निर्णय लेने के लिए ही इस सभा का अयोजन हुआ है न! तो ये सत्कार कार्य भी एक दिन में पूर्ण न हो। गाँव का हर एक व्यक्ति एक-एक दिन उसे अपने घर दावत के लिए निमंत्रण दे, तभी जाकर यह सत्कार चिरस्थायी व पूर्ण होगा।"

ग्रामाधिकारी सहित सभी को यह सलाह सही लगी। पर मदन सोच रहा था कि मातंग ने जो अहंकार सबके सम्मुख नहीं दर्शाया है वह जब अलग-अलग हर एक के घर जाएगा तो अपने अहं को छिपा नहीं सकेगा और स्पष्ट रूप से सबको दिखेगा और सभी लोग मान जाएँगे कि मेरे कथन में कितना सत्य है।

Cycle साइकिल ಸೈಕಲ್ಲು Kannada सैकल्लु

राजधानी में पंडितों की जो सभा हुई, उसमें मातंग का विशिष्ट रूप से सम्मान हुआ। राजा ने उसे मूल्यवान भेंटें प्रदान कीं और लौटने के लिए एक रथ का भी प्रबन्ध किया। किन्तु सभा में भाग लेने विविध प्रान्तों से उसके जो बन्धु और मित्रगण आए थे, उन सबने उससे अभ्यर्थना की कि वह उनके घर अवश्य ही आए। इसलिए उसने रथ में जाने से मना कर दिया।

मातंग हर बन्धु व मित्र के घर गया और उनका सत्कार अत्यंत प्रेम से स्वीकार किया। तत्पश्चात् वह अपने गाँव नागपुर लौटने लगा। सघन वन्य मार्ग से लौटते समय वह थक गया तथा विश्राम हेतु एक पेड़ के नीचे लेट गया। तभी दो लुटेरे अचानक उसके सामने आ धमके और उसे डराते हुए कहने लगे, ''तुम्हारे पास जो मूल्यवान वस्तुएँ हैं, सब हमारे सुपुर्द कर दो।'' बिना सकपकाए मातंग ने उनसे कहा, ''मेरे पास राजा की दी हुई मूल्यवान भेंटें हैं। अतः ये मेरे लिए इनके मूल्य से भी कहीं अधिक मूल्यवान हैं। इन्हें मैं तुम्हें नहीं दे सकता। हाँ, एक धन इनसे अधिक मूल्यवान है व जिसे कोई तुमसे छीन भी नहीं सकेगा। वह है विद्याधन - सबसे उत्तम धन। वह धन मैं तुम्हें अवश्य दे सकूँगा। इसके लिए तुम दोनों को मेरे साथ आना होगा। तुम्हें मेरी बात ठीक लगे तो मेरे साथ ही चलो या बाद में आ जाना।''

लुटेरे उस पर हँसे फिर आँखें दिखाते हुए बोले, ''तुम्हारी तरह भले ही हम पढ़े-लिखे नहीं हैं पर इतने भी बेवकूफ नहीं हैं कि तुम्हारी बातों में आ जाएँ और तुम्हारा विश्वास कर लें। चुपचाप सब कीमती सामान निकाल कर हमें दे दो नहीं तो...!'' कहते हुए तलवार निकाली।

अभी उनका वाक्य भी पूरा नहीं हुआ था कि उस पेड़ पर से एक राक्षस कूदा और लुटेरों को डराते हुए उन्हें वहाँ से भगा दिया। तब वह विस्फरित नेत्रों से देख रहे मातंग से बोला, ''मेरा नाम जयदेव है। मुझे यहाँ तपस्या करते हुए कई वर्ष हो गए। कोई भी इस पेड़ के नीचे इसकी भयावहता व मेरे कारण नहीं रुकता और तुम यहाँ विश्राम कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि मेरी तपस्या पूर्ण हो गई। अपने अहंकारवश मैं एक महात्मा के हाथों शापग्रस्त हुआ और राक्षस बन गया। अहंकार रहित व्यक्ति का आशीर्वाद पाने पर ही इस शाप

Cycle साइकिल ସାଇକେଲ Oriya सायकेल

से मैं मुक्त हो सकूँगा। आप असाधारण पंडित जान पड़ते हैं क्योंकि इस पेड़ तथा लुटेरों के भय से आप पूर्णतया मुक्त हैं। अब आप मुझे आशीर्वाद दीजिए जिससे मैं शाप मुक्त हो सकूँ।''

तब मातंग ने अपने बारे में सब कुछ बताते हुए कहा, ''अभी यह कहना कि मुझ में अहंकार नहीं है, वह भी एक प्रकार से अहंकार ही है। अतः मैं तुम्हें आशीर्वाद नहीं दे सकता। वास्तव में किसी व्यक्ति में अहंकार है या नहीं यह जान पाना बहुत ही दुष्कर कार्य है।''

''आपकी बातों से ही ज्ञात होता है कि आप में लेश मात्र भी अहं नहीं है। फिर भी मेरे पास अहंकारी व विनम्र व्यक्ति में भेद जानने हेतु एक उपाय है।'' कहते हुए उसने लाल रंग के पत्थर की एक अँगूठी निकाली और उसे देते हुए कहा, ''अहंकारियों की अँगुली में इस अँगूठी का पत्थर अहं के समान ही रक्तवर्णी हो जाएगा तथा विनम्र व्यक्तियों के हाथों में यह जल के समान नीलवर्णी हो जाएगा।''

मातंग ने जैसे ही अँगूठी को अपनी अँगुली में डाला पत्थर नीले रंग का हो गया। जयदेव यह देख कर बहुत प्रसन्न हुआ, पर मातंग ने कहा, ''राज सम्मान पाकर अब मैं अपने गाँव जा रहा हूँ। वहाँ हो सकता है मुझ जैसा साधारण इन्सान गर्व से भर उठे। अतः मैं लौट कर आने पर ही आपको आशीर्वाद दूँगा।'' जयदेव ने बड़ी ही निष्ठापूर्वक उसके कथन को स्वीकार किया और प्रतीक्षा हेतु पेड़ पर चढ़ गया।

मातंग जैसे ही नागपुर पहुँचा, गाँववासियों ने उसका भव्य स्वागत किया। ग्रामाधिकारी सहित सभी ने उसे अपने-अपने घर आमंत्रित किया। मदन ने भी बेमन से कहा, ''संभव हो तो एक दिन मेरे घर भी आना।''

मातंग हर एक के घर गया पर मदन के घर नहीं गया। इसी बहाने मदन गाँव भर में यह प्रचार करने लगा, ''देखा न, यही है मातंग का असली रंग। जिस-जिसने बुलाया, उस-उस के घर गया और भोजन किया। मैंने बुलाया, पर मेरे घर नहीं आया। किसानों को वह हेय दृष्टि से देखता है।''

मातंग के प्रति ग्रामीणों में आदर था इसलिए किसी ने भी उसके सामने इसका जिक्र नहीं किया। रंजन उस गाँव का ग़रीब किसान था।

Cycle साइकिल સાયકલ Gujarati सायकल

उसके बुलाने पर मातंग बेहद प्रसन्न होकर उसके घर गया। यह देख कुछ अन्य ग़रीबों ने भी उसे आमंत्रित किया। मातंग ने सभी के निमंत्रण का मान रखा और सभी के यहाँ गया।

अब यह साबित हो गया कि मदन का आरोप गलत है। इस बार वह कहने लगा, "मातंग उन्हीं के घर जाता है, जो उससे कमतर हैं। वह अपने से बड़े लोगों के घर नहीं जाता क्योंकि उनके बीच उसका दम घुटता है। वह अपने से बड़े उन्हीं लोगों के घर जाता है जिनके हाथों में अधिकार है। मैं चूँकि उससे अधिक धनवान हूँ कि इसलिए अहंकारवश वह मुझसे ईर्ष्या करता है।"

यह बात ग्रामाधिकारी तक पहुँची। उससे नहीं रहा गया इसलिए मातंग को बुला कर उसने कहा, "मातंग, मुझे लगता है कि मदन की बातों में सच्चाई है कि तुम अहंकारी हो। नहीं तो जैसे भी हो स्वयं को साबित करके मदन का मुख बंद करो।"

मातंग ने उसे जयदेव की कथा सुनाई और कहा मेरी अँगुली में जो पत्थर है वह अब तक लाल नहीं हुआ। फिर भी यह मानने के लिए मुझे कोई ऐतराज़ नहीं कि मैं अहंकारी हूँ। इस अँगूठी की सहायता से मैं एक ऐसे ही व्यक्ति की तलाश में हूँ जो कि पूर्णतया विनम्र हो व जिसमें लेश मात्र भी अहंकार न हो क्योंकि तभी उस विनम्र व्यक्ति की मदद से जयदेव का शाप विमोचन हो सकता है।"

ग्रामाधिकारी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "ऐसी अँगूठी जब तुम्हारे पास है तो देरी किस बात की है? चलो सब ग्रामीणों को बुलाएँगे।"

ग्रामाधिकारी ने गाँव के सभी लोगों को बुलाया

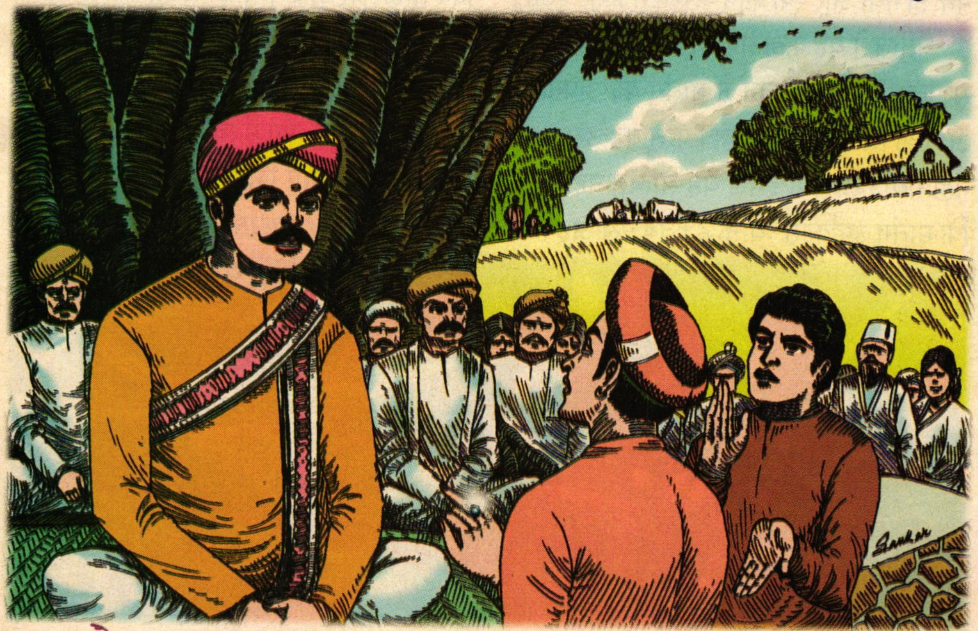

Cycle	साइकिल	চাইকেল	Assamese	चाइकेल

और सारा वृतान्त कहा। मदन सहित एक-एक करके सभी ग्रामीणों की अँगुली में वह अँगूठी पहनाई गई और वह लाल ही दृष्टिगोचर हुई। तब अंत में दोबारा मातंग के पहनने पर वह अँगूठी फिर से नीलवर्णी हो गई।

सबने अँगूठी की महिमा मान ली। पर यकायक मदन बोला, ''मातंग ने सबका बुलावा मान लिया पर मेरा आह्वान ठुकरा दिया। मेरे घर भोजन करने नहीं आया। मैं यह मानने को तैयार नहीं कि वह अहंकारी नहीं है। इस अँगूठी में कोई धोखा है। मुझे लगता है कि मातंग की बताई कहानी झूठी व बेबुनियाद है।''

मातंग अपनी बात सिद्ध करने के लिए मदन को अपने साथ जंगल ले गया। वहाँ जैसे ही उसने भयानक राक्षस को आशीर्वाद दिया। वह शाप मुक्त हो गया और एक ऋषि के रूप में प्रकट हुआ।

वेताल ने यह कहानी सुनाकर राजा विक्रमार्क से पूछा, ''राजन्, मदन ने मातंग को अपने घर आने के लिए कई बार कहा। परंतु वह उसके घर नहीं गया। तो क्या इससे यह साबित नहीं होता कि मातंग अहंकारी व्यक्ति है। तब ऐसे अहंकारी के आशीर्वाद से राक्षस कैसे मुनि बन गया? वह कैसे शाप मुक्त हो गया? मातंग मदन के घर नहीं गया क्या इसके पीछे कोई विशेष कारण है? मेरे इन संदेहों के समाधान को जानते हुए भी चुप रहोगे तो तुम्हारा सर फट जाएगा।''

राजा विक्रमार्क बोला, ''सच्चे पंडितों में अहंकार नहीं होता। मातंग असली पंडित है। इसी कारण से राजा तथा उसके बन्धु व मित्रों के साथ-साथ गाँववासियों ने उसे सम्मान के साथ बड़े ही प्यार से बुलाया। पर मदन ने सिर्फ इतना ही कहा कि यदि संभव हो तो मेरे घर आना। उसने निश्चित रूप से यह नहीं बताया कि वह किस दिन उसके घर आए। इसका यह तात्पर्य हुआ कि उसके बुलावे में चित्त शुद्धि नहीं थी। स्वाभिमानी ऐसे आह्वान स्वीकार नहीं करते। वे यह भी नहीं पूछते कि किस दिन तुम्हारे घर आऊँ। मातंग स्वाभिमानी तो था परंतु अभिमानी नहीं था। इसीलिए उसके आशीर्वाद से राक्षस शाप मुक्त हुआ।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार-वसुंधरा की रचना)

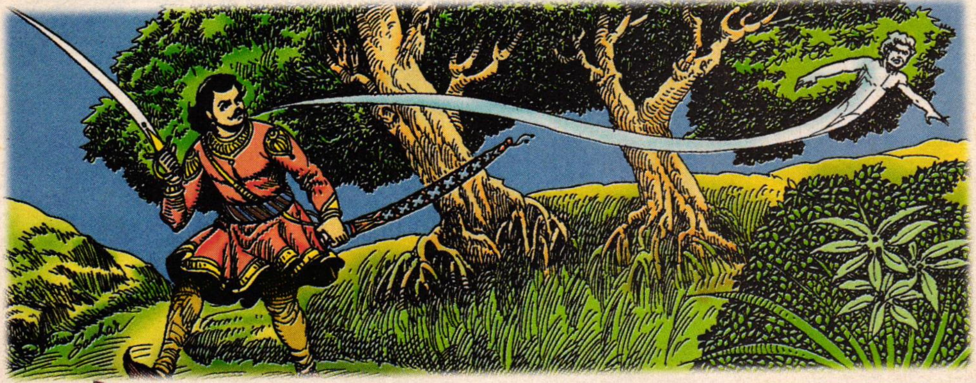

Cycle साइकिल സൈക്കിൾ Malayalam सैकिल

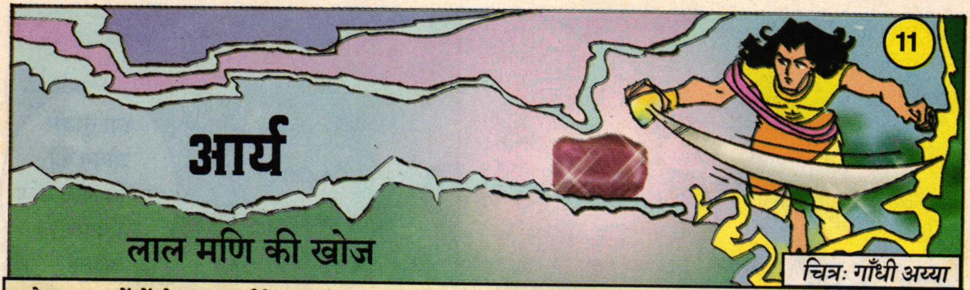

खोए हुए बच्चों में से एक आर्य के सामने प्रकट होता है और धर्म पिता कहलाने वाले एक रहस्यमयी व्यक्ति के पास ले जाता है जो कि आर्य को उसकी ओर लाने की कोशिश कर रहा है।

हाँ...
तुमने स्वर्णद्वीप की लाल मणि की गाथा तो सुनी होगी।
मैं अपना जीवन समाप्त कर दूँगी। मैंने अपने कुल का नाम मिट्टी में मिला दिया!
कौन है यह? सामने आओ?
क्या तुम्हारे जीवन की समाप्ति लाल मणि को वापस ले आएगी?
मैं लाल मणि का रक्षक हूँ।
लाल मणि अभी भी एक मारेक के कब्ज़े में है। इसीलिए मैंने तुम्हें नहीं छोड़ा?
एक मारेक? मेरे अपने कबीले के आदमी ने उसे चुराया?
हाँ। जैसा कि तुम जानती हो, लाल मणि रक्त से ही जीती जानी चाहिए तभी यह अपने स्वामी को सुरक्षा प्रदान करती है।

इसलिए वह उस कायर के किसी काम की नहीं है जिसने उसे लिया है।
तब तो मैं उसका शिकार करूँगी।
वह अभी तक उसके रहस्य नहीं खोज पाया है। उसने लाल मणि को एक जानवर के पेट में छिपा दिया है।
मरिघा ने अपने लक्ष्य को पाने के लिए एक मादा भेडिए का रूप धारण कर लिया।
इन सभी जंगली जानवरों का शिकार उसने ही किया है।
...लेकिन उसने नहीं किया?
उसने नहीं किया।

यह कहानी किसी और वक्त के लिए है, राजा!
तुम उसकी सहायता क्यों करना चाहते हो?
तुम अब थक गए होगे। तुम थोड़ा आराम क्यों नहीं कर लेते?
क्या तुम मेरी रक्षा कर रहे हो?
हाँ राजन्।
क्या मैं इतना कमज़ोर राजा हूँ कि मुझे अपनी सुरक्षा के लिए बच्चों की आवश्यकता पड़े।
ये बच्चे ही हैं जिन्होंने संसार को निराशा से बचाया हुआ है। उम्मीद का मज़ाक न उड़ाओ, राजन्।
और है

युद्धकाण्ड-१२

रावण राम का प्रहार न सह सका और भाग गया। फिर राम वहाँ गए जहाँ लक्ष्मण मूर्छित पड़े थे। उनकी साँस धीमे-धीमे चल रही थी। लक्ष्मण की हालत देख कर राम घबरा गए। सुषेण वैद्य ने बताया कि चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि प्राणों का भय नहीं था। फिर उन्होंने हनुमान से कहा, ''जाम्बवन्तजी ने जिस औषधि पर्वत के बारे में कहा था उसके दक्षिण शिखर से चार तरह की औषधियाँ ले आओ।''

हनुमान औषधि पर्वत के पास गए पर वे उन्हें पहचान न सके। इसलिए यह सोचते हुए कि उसमें लक्ष्मण के लिए आवश्यक औषधि कहीं न कहीं तो होगी ही, वे समूचे पर्वत शिखर को ही उखाड़ ले चले। युद्ध भूमि में जा कर उन्होंने उसे ले जाकर पास ही रख दिया और सुषेण वैद्य से कहा, ''आपने जो दवाइयाँ बताई थीं उन्हें मैं पहचान न सका, इसीलिए सारा शिखर ही उठा ले आया हूँ। अब आप स्वयं उन अद्भुत औषधिओं को पहचान कर पचार शुरू करें।''

सुषेण वैद्य ने औषधि ली तथा उसे पीस कर उसके रस को लक्ष्मण की नाक में डाला। उसकी सुगन्ध सेवन करते ही लक्ष्मण उठ कर बैठ गए।

राम ने अपने भाई का आलिंगन करके आनन्दाश्रु बहाते हुए कहा, ''लक्ष्मण! तुम मेरे सौभाग्यवश मर कर फिर जीवित हो उठे हो। अगर तुम गुज़र जाते, तो मैं सीता पाकर भी क्या करता? युद्ध में विजय किस काम की होती?''

यह सुन कर लक्ष्मण ने कहा, ''क्यों बलहीन

Cycle साइकिल Santali डुलुं

की तरह बातें कर रहे हो? क्या रावण को मार कर, विभीषण को राजा बनाने का वचन नहीं निभाओगे? मेरे बारे में निराश न हो। रावण को युद्ध में मार दो।''

लक्ष्मण के यह कहते ही राम ने स्थिर चित्त हो धनुष हाथ में लिया। इसी बीच रावण भी एक और रथ में सवार होकर, युद्ध के लिए तैयार होकर आया। राम भूमि पर थे और रावण रथ पर था और दोनों में युद्ध प्रारंभ हो गया।

इतने में इन्द्र का सारथी मातली देवलोक से एक दिव्य रथ, कवच, धनुष, बाण और शक्तियाँ लेकर, उस जगह आया, जहाँ राम थे। उसने उनसे कहा, ''राम, देवेन्द्र ने तुम्हारे लिए ये सब भेजे हैं। इस रथ पर सवार होकर, तुम रावण को मारो।''

राम ने रथ की प्रदक्षिणा की और नमस्कार करके उसमें सवार हो गए।

पहले कुछ देर तक रावण ने राम को थकाने के लिए युद्ध किया। जब उसे लगा कि राम युद्ध क्लांत लग रहे हैं तब उसने वज्र के समान शूल का राम पर प्रयोग किया। उसके अनुमानानुसार वे उसे बाणों से न रोक सके और उन्होंने इन्द्र द्वारा भेजी हुई शक्ति से उसे ध्वस्त कर दिया।

उसके बाद युद्ध में राम का भयंकर रूप देख कर रावण हक्का-बक्का रह गया। राम के बाण उसे छलनी किए जा रहे थे। यह देख कर रावण का सारथी उसके रथ को युद्ध भूमि से दूर ले जाने लगा।

रावण को अपने सारथी पर क्रोध आ गया, ''अरे मूर्ख, क्या मैं डरपोक हूँ? नालायक हूँ? क्या मेरे पास अस्त्र नहीं हैं? क्या मुझ में अक्ल नहीं है? आखिर क्या सोच कर तुम रथ को युद्ध भूमि से दूर ले जा रहे हो? तुमने तो हमें बदनाम ही कर दिया। क्या तुम्हें शत्रु ने कहीं कोई घूस तो नहीं दी है? तुरंत रथ को घुमाओ और रण भूमि में ले चलो।'' उसने अपने सारथी को डाँटते हुए आदेश दिया।

''महाराज, मैंने आपके हित के लिए ही रथ को पीछे हटाकर अपना सारथी धर्म निभाया है। आप युद्ध में राम का सामना नहीं कर पा रहे हो। सच तो यह है कि आपकी सुरक्षा की जिम्मेदारी मेरी ही तो है। यदि मैं यह न जानूँ कि रथ कब और कैसे चलाया जाए तो मैं आपका सारथी ही नहीं हूँ। अब बताइए कि क्या किया जाए? मैं वैसा ही करूँगा, परंतु आवेश में आकर कोई गलत निर्णय मत

Cycle साइकिल द्विचक्रिका Sanskrit द्विचक्रिका

लीजिए।'' रावण के सारथी ने शांत स्वर में कहा।

रावण ज़रा सँभला। उसने अपने सारथी की कुछ प्रशंसा की और दृढ़ता से बोला, ''अब चलो, राम के सामने रथ को ले चलो।'' थोड़ी देर में उसका रथ राम के सामने आया।

उस समय राम भी पूरी तरह थक गए थे और रावण से युद्ध करने की स्थिति में नहीं थे। यह देख, युद्ध को देखने के लिए आए हुए अगस्त्य ऋषि ने राम के पास जाकर कहा, ''राम, मैं तुम्हें आदित्य हृदय मंत्र बताता हूँ, उसे जप कर शक्तिवान होकर रावण से युद्ध करो।'' उन्होंने आदित्य हृदय मंत्र का अत्यंत सूक्ष्म स्वरूप बताया जिसे क्षण मात्र में जपा जा सके। राम ने उसे मात्र तीन बार ही जपा था कि वे आदित्य के समान बल एवं बुद्धि युक्त होकर स्वयं को दोगुना बलवान अनुभव करने लगे। इस प्रकार दोगुना बल पाकर उन्होंने अपने अस्त्र उठाए तथा रावण से युद्ध हेतु आगे बढ़े।

उन्होंने सारथी मातली से कहा, ''इस बार रावण मेरे हाथों बच नहीं पाएगा। तुम रथ को युक्तिपूर्वक चलाओ। हालांकि मुझे यह सब कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि तुम स्वयं देवेन्द्र के सारथी हो। बस मैं यही याद दिलाना चाहता हूँ कि तुम किसी भी हालत में पीछे नहीं हटना।''

मातली ने रथ को इस प्रकार चलाया कि उसकी धूल ने रावण को घेर लिया। वह रावण की ओर रथ ले गया। रावण ने क्रुद्ध होकर राम पर बाण वर्षा प्रारंभ कर दी। राम ने भी इन्द्र द्वारा भेजे धनुष-बाण से रावण के बाणों का तूफानी गति से विध्वंस शुरू कर दिया।

राम और रावण में इतना भयंकर युद्ध हुआ कि दोनों तरफ के लोग युद्ध छोड़ उनका द्वंद युद्ध देखने लगे। दोनों ने इस बार ऐसा पराक्रम दिखलाया

Sun सूरज సూర్యుడు Telugu सूर्युडु

मानो वह उनका अन्तिम युद्ध हो।

जब राम यूँ भयंकर युद्ध कर रहे थे, तो राम द्वारा चलाए गए तेज़ बाण से रावण का शीश कटकर ज़मीन पर गिर गया। पर उसी समय रावण का किसी पौधे की भाँति एक और सिर उग आया।

इस प्रकार राम ने एक सौ एक बार रावण का सिर काटा, तब भी वह रावण का कुछ भी न बिगाड़ सके। यह देख रावण राम का कौतूहल मिश्रित उद्वेग देख कर वीभत्स रूप में हँसा। राम समझ ही नहीं पा रहे थे कि उनके अमोघ से अमोघ अस्त्र भी रावण पर निष्फल क्यों हो रहे हैं।

राम और रावण का इस प्रकार बिना विश्राम के सात दिनों तक युद्ध चला परंतु सब व्यर्थ रहा। यह देख मातली ने राम से कहा, ''इसे मार क्यों नहीं देते? आगे-पीछे क्या कर रहे हैं? इस पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करो।'' तभी विभीषण सम्मुख आये और कहा, ''इसे मार पाना कठिन इसलिए हो रहा है क्योंकि इसकी नाभि में अमृत कुण्ड रखा है। पहले ब्रह्मास्त्र से उसे सोखिए तत्पश्चात् इसे मारने के लिए एक साधारण बाण ही काफी होगा।''

मातली तथा विभीषण की सलाह मान कर राम ने एक महासर्प-सा बाण निकाला। आदित्य से प्रकाशवान उस बाण को ब्रह्मा ने कभी इन्द्र के लिए तैयार किया था। वह अत्यंत भारी तथा वज्र के समान मजबूत था। साथ ही उसमें लगे पंखों की वजह से उसकी गति मन सदृश्य थी। उसके सामने कोई अन्य अस्त्र नहीं टिक सकता था। राम ने उसे प्रत्यंचा पर चढ़ाया। तत्पश्चात् मंत्र पढ़ कर उसे रावण की नाभि पर निशाना साध कर छोड़ दिया। उन्हें दूसरा बाण प्रयोग करने की आवश्यकता ही न रही। रावण के हाथ से धनुष बाण गिर गए और वह निष्प्राण होकर रथ से गिर पड़ा।

यह देख कर जो राक्षस मरने से बच गए थे, वे भाग खड़े हुए। रावण के मरते ही देवता दुन्दुभी बजाते हुए पुष्प वर्षा करने लगे। भूमि पर वानर तथा आकाश में देवता एक साथ मिल कर राम की जय-जयकार करने लगे। राम, सुग्रीव और वानर प्रमुख, विभीषण ने राम-लक्ष्मण के चारों ओर खड़े होकर उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

भाई के मारे जाने पर विभीषण दुखी हुआ। सीता के अपहरण के कारण रावण का नाश हो गया था। अन्यथा वह वास्तव में महापुरुष था। चारों वेदों

Sun सूरज சூரியன் Tamil सूरियन

का ज्ञाता व प्रकाण्ड पंडित था। वह परम निष्ठावान था। वह महान शूरवीर और पराक्रमी था।

भाई की मृत्यु पर विभीषण को आश्वासन देते हुए राम ने कहा, ''रावण कामी की मौत नहीं मरा है, वीर की तरह वह लड़ा और मर गया। युद्ध में जय-पराजय भाग्य के आधीन होते हैं। बड़े से बड़ा वीर शत्रु के हाथों मारा जा सकता है। वीर की मृत्यु पाकर, उस परम वीर स्वर्ग पाने वाले के लिए क्यों दुखी होते हो?''

राम की अनुमति पर विभीषण अपने भाई का शास्त्रोक्त रीति से दाह संस्कार करने का उपक्रम करने लगा।

यह जानते ही कि रावण की मृत्यु हो गई है, उसकी पत्नियाँ रोती-रोती उत्तर द्वार से बाहर निकली और रावण के शव को ढूँढ़ती-ढूँढ़ती आयीं। आखिर उन्होंने शव को देखा तो स्वयं को सँभाल न सकीं और उस पर गिर पड़ीं। उनके दारुण रुदन से सारा वातावरण विदीर्ण हो उठा। वे अपनी छाती पीट-पीट कर रोते हुए कहने लगीं कि यदि सीता को राम को वापस कर दिया होता तो यह महान प्रतापी मस्तक यूँ धूल धूसरित न होने पाता। मन्दोदरी रोते हुए कह रही थी- ''तीनों लोकों को जीत कर, देवताओं को परास्त करनेवाले तुम जैसे महापुरुष को क्या एक मामूली आदमी के हाथों ही मरना था?''

''इन स्त्रियों को घर भेज दो और तुम अपने भाई का दाह संस्कार करो।'' राम ने विभीषण से कहा।

विभीषण मन में विचार करने लगा, एक दुष्ट, बदचलन भाई का, मैं क्यों दाह संस्कार करूँ? विभीषण ने अपनी व्यथा राम से कही तो वे बोले, ''देखो, सोया हुआ या मृत मनुष्य एक बालक की ही भाँति निश्छल होता है। उस समय वह सभी भावनाओं तथा विकार रहित होता है अतः ईश्वर सदृश पूजनीय होता है। अब रावण के स्थान पर मात्र उसका शरीर ही शेष है तथा उसके मरणोपरान्त उससे घृणा भी उचित नहीं क्योंकि वीरोचित धर्म का पालन करते हुए मृत्यु को होने के कारण उसके समस्त विकार मृत्यु के साथ ही मिट गए। अब तुम्हें अपना कर्म करना है।'' इस प्रकार विभीषण के मन का सारा मैल जाता रहा और दाह संस्कार संपन्न करने हेतु वे उठ खड़े हुए।

Sun सूरज सूर्य Bengali सूर्ज्य

बधाइयाँ ! चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी अक्तूबर २००९ के उत्तर : C
विजेता : परुल रतवाल, नई दिल्ली

ब्राह्मणों ने चन्दन की लकड़ियों से चिता बनवाई और उस पर एक कम्बल बिछाया गया। रावण के शव को अलंकृत करके चिता पर लिटा दिया गया। विभीषण ने चिता पर आग लगाई। फिर उसने गीले वस्त्र पहन कर जल दिया। स्त्रियों को महल भेज कर, राम के पास आया।

युद्ध को देखने के लिए आए हुए देव, दानव, गन्धर्व आदि राम के पराक्रम व वानरों के युद्ध के बारे में बातें करते करते अपने घर चले गए। राम ने मातली का सम्मान करके उसको रथ के साथ स्वर्ग भेज दिया। फिर राम ने कृतज्ञतापूर्वक सुग्रीव का आलिंगन किया और लक्ष्मण के साथ शिविर में गए।

तब उन्होंने लक्ष्मण से कहा, "अब सबसे मुख्य काम, विभीषण का राजा के रूप में राज्याभिषेक करना है। वह काम जल्दी करवाओ।"

लक्ष्मण ने वानरों को स्वर्ण कलश देकर, समुद्र जल मँगवाया तथा विभीषण को राजसिंहासन पर बिठा कर उस जल से अभिषेक किया। विभीषण के मंत्री और उसके मित्र राक्षस बड़े ही प्रसन्न हुए। विभीषण ने प्रजारंजक बातें कहीं। राक्षस प्रजा ने उसको तरह तरह के उपहार और पुरस्कार दिए। विभीषण ने राम और लक्ष्मण को दिव्य वस्तुएँ उपहार में दीं।

चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी

इन्द्र के सारथी का क्या नाम था जिसने राम-रावण युद्ध में श्री राम की उनके दिव्य रथ का सारथी रूप में उनकी सहायता की थी?

a. सुषेण b. मातली c. अगस्त्य

आप अपना उत्तर CRQ <a/b/c> <space> <Name, Lang, Address> लिखकर 54646 पर SMS कर दो। बेतरतीब तरीके से चुने गए एक विजेता को चन्दामामा के 'कॉमिक काम्बो पैक' पुरस्कृत दिया जाएगा।

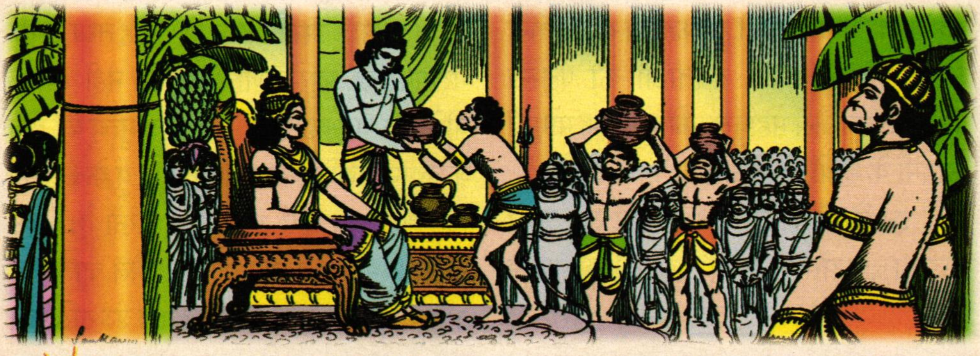

Sun सूरज सूर्य Marathi सूर्य

पंचतंत्र की कथाएँ

मित्र भेद

दक्षिण भारत में महिलारूप्य नामक एक राज्य था। अमरशक्ति नामक राजा वहाँ का शासक था। वह बड़ा ही पराक्रमी, धीर, दयावान, ललित कला प्रेमी और राजनीतिज्ञ था।

बहुशक्ति, उग्रशक्ति तथा अनंतशक्ति नामक उसके तीन पुत्र थे। वे अनपढ़ तो थे ही साथ में लोकाचार से बिल्कुल ही अपरिचित थे। राजनीति, राजतंत्र व साधारण ज्ञान तो उनमें नाम मात्र के लिए भी न था। अपने पुत्रों को लेकर राजा अत्यंत चिंतित रहते थे।

एक दिन उन्होंने अपने मंत्रियों को बुलाकर उनसे कहा, ''आप सब लोग जानते हैं कि मेरे तीनों पुत्र मूढ़ हैं। ज्ञान तथा बुद्धि हीन पुत्र निष्फल गाय की तरह निरर्थक हैं। ऐसे पुत्रों को जन्म देने के बदले निःसंतान होना ही श्रेयकर है। ऐसे व्यक्ति का संन्यास लेना ही बेहतर होता है। पर अब इस अत्यंत कठिन परिस्थिति में आप लोग कोई ऐसा मार्ग सुझाइए जिससे वे राजनीति जान सकें तथा शासन चलाने की दक्षता उनमें आ जाए।

एक मंत्री ने सुझाव दिया, ''इस नगर में विष्णुशर्मा नामक एक गुरू हैं। समस्त कलाओं में वे सिद्ध हैं, यही नहीं उनमें बड़ी ही सुगमता से विषय को सरल बना कर सिखाने की योग्यता है। महाराज, आप अपने पुत्रों को निःशंक उनके सुपुर्द कर सकते हैं। निश्चय ही वे योग्य बन कर बड़े होंगे और सभी विद्याओं में पारंगत बन सकेंगे।''

राजा ने विष्णु शर्मा को बुलवाया और कहा, ''आप यदि मेरे पुत्रों को योग्य बना देंगे तो सौ गाँव तथा स्वर्ण पुरस्कार में दूँगा।''

''महाराज, मैं विद्या बेचता नहीं। अस्सी वर्ष की उम्र का हूँ। अब मुझे धन की क्या आवश्यकता है? जो माँगते हैं, उन्हें विद्या दान देना ही मेरा कर्तव्य है। छः महीनों में ही आपके पुत्रों को राजनीति

Sun सूरज ಸೂರ್ಯ Kannada सूर्य

नीतिपूर्वक व्यापार करके अपार संपदा कमायी।

एक बार वर्धमान सेठ के मन में नगर से बाहर जाकर धन कमाने की इच्छा हुई। वह दो बैल-गाड़ियों में व्यापार हेतु मूल्यवान सामग्री एकत्र कर यमुना नदी के तटवर्ती मथुरा नगर जाने के लिए निकल पड़ा। उन बैलगाड़ियों में जुते नंदिक व संजीवक नामक दोनों ही बैल श्रेष्ठ नस्ल के थे।

सफर चलता रहा। कुछ दिनों में वे यमुना नदी के पास ही के निर्जन वन से गुज़रने लगे। उस घने वन में एक जगह कीचड़ में फिसल कर संजीवक बैल के पैर की एड़ी टूट गई। बहुत चेष्टा करने पर भी वह उठ न सका। गाड़ीवान ने वर्धमान को यह बात बतायी।

यह जानकर वर्धमान बहुत चिंतित हुआ। चिकित्सा का भी कोई फायदा न हुआ। इसलिए वह दूसरी बैलगाड़ी, सामान व नौकरों के साथ शीघ्र मथुरा पहुँचा। वहाँ आवश्यक कार्य में व्यस्त रहने से देर होने लगी तो उसने एक दूसरे सेवक को आवश्यक चारा तथा धन दिया तथा गाड़ीवान के पास यह कहकर भेजा कि बैल का अच्छा ख्याल रखना, जब वह ठीक हो जाए तो गाड़ी ले आना। अगर वह मर जाए तो उसका दाह संस्कार वहीं कर देना और मुझे इसकी खबर देना।

यों उन्हें इसकी ज़िम्मेदारी सौंपने के बाद वह अपने कार्य में संलग्न हो गया। सेवक शाम तक गाड़ीवान के पास पहुँचा। उन दोनों आदमियों को अँधेरा होने पर उस जंगली जानवरों से भरे निर्जन वन में बहुत डर लगा। वे बैल को वहीं अकेला

और विवेक सिखा दूँगा।'' विष्णु शर्मा ने कहा।

राजा बहुत ही खुश हुआ और अपने पुत्रों को उनके सुपुर्द किया।

ऐसा वादा करके विष्णुशर्मा तीनों राजकुमारों को अपने साथ ले गए तथा पशु-पक्षियों व जलचरों की कहानियों से भरपूर पंचतंत्र के द्वारा पाँच ही महीनों में उन्हें नीतिनिपुण तथा सभी कलाओं में पारंगत बना दिया। वे पाँच भाग इस प्रकार हैं: मित्र भेद, मित्र सम्प्राप्ति, काकोलूकीयम्, लब्ध प्रणाश व अपरीक्षितकारकम्।

प्रथम तन्त्र : मित्र भेद - सिंह एवं बैल

दक्षिण राज्य के महिलारूप्य नामक नगर में वर्धमान नामक व्यापारी रहा करता था। वह बड़ा ही नीतिवान, धनी व दानी था। उसने धर्म व

Sun सूरज ସୂର୍ଯ୍ୟ Oriya सूर्ज्य

छोड़कर भाग खड़े हुए और दूसरे दिन वर्धमान के पास जाकर झूठ कह दिया कि बैल मर गया।

किंतु सौभाग्यवश जंगल की नर्म ताज़ी घास व पूरा आराम मिलने से संजीवक का स्वास्थ्य सुधरता गया। वहाँ नदी के किनारे पुष्टिकर घास चरने लगा और नदी का स्वच्छ जल पीकर शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो गया। उसे देख कर लगता था मानो साक्षात शिव वाहन नंदी हो।

उस अरण्य में पिंगलक नामक एक सिंह था जिसके बहुत से मित्र व अनुयायी थे। एक दिन वह जब पानी पीने गया तो उसने संजीवक के रंभाने की आवाज़ सुनी। इस प्रकार की ज़ोरदार आवाज़ उसने पहले कभी नहीं सुनी, उसे समझ नहीं आया कि यह जानवर कौन है? इस उत्कण्ठा को जानने के लिए उसने अपने अनुचरों को भेजा। उसके कमज़ोर अनुचरों को बैल अत्यंत बलवान दिखाई दिया और उन्होंने बढ़ा-चढ़ा कर सिंह के समक्ष उसका वर्णन किया। पिंगलक डर कर वहीं बैठ गया और विचार करने लगा कि क्या किया जाए? मृगराज को मानव राजा की भाँति पढ़ाई-लिखाई की आवश्यकता नहीं होती, उसकी प्रकृति ही उसे राजा बनाती है।

सिंह के साथ रहनेवाले करटक और दमनक दो सियार भी थे। वे दोनों पहले राजा के दरबारी हुआ करते थे परंतु किसी बात से रुष्ट होकर उन्हें सेवा से हटा दिया गया था। पदच्युत होकर भी वे सिंह के आस-पास घूमते रहते थे कि कभी उन्हें अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा वापस मिल जाए। उन दोनों ने देखा सिंहराज पानी पीने तो गया परंतु बिना पिए ही वापस क्यों आ गया। दमनक

Sun	सूरज	सूर्य	Gujarati	सूर्य

ने करकट से पूछा, "तुमने हमारे राजा को देखा वह बिना पानी पिए ही वापस क्यों आ गया। इसका क्या कारण हो सकता है? वह बहुत ही दीन हीन और चिंतित दिखाई दे रहा है। अवश्य ही इसके पीछे कोई रहस्य होगा?"

करटक ने कहा, "भैया कभी भी राजा के विषय में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। ऐसे चपल मित्रों से सदा दूर रहना चाहिए और उनके कामों में दखलंदाज़ी करना जोखिम भरा हो सकता है। ऐसा करने वाले की वही दशा होती है जो उस कील उखाड़ने वाले बंदर की हुई थी।"

"वह कैसे?" आश्चर्य भरे स्वर में दमनक ने पूछा।

करकट ने उस नटखट मूर्ख बंदर की कथा यों बतायी:-

एक नगर के बाहर एक व्यापारी एक मंदिर का निर्माण करवा रहा था। कारीगर व श्रमिक हर दिन दोपहर को भोजन करने हेतु नगर में आ जाते थे। एक दिन हमेशा की भाँति ही सब सामान व कार्य ज्यों का त्यों छोड़ कर कारीगर व श्रमिक दोपहर में नगर चले गए। उनमें से एक श्रमिक ने आधे चिरे हुए वृक्ष के एक तने के बीचों-बीच लकड़ी का एक खूँटा गाड़कर छोड़ दिया।

उसी समय बन्दरों का एक समूह उछलता-कूदता वहाँ आ पहुँचा। बाकी बंदर उछल कूद कर खेल रहे थे पर एक नटखट बंदर ने यह सोचा, "यह यहाँ क्यों है?" यह सोच कर उसने बिना वजह कील को दोनों हाथों से पकड़ा और अपना पूरा बल लगा कर उखाड़ दिया। उस कील के खिंचते ही लकड़ी के दोनों फाड़ जुड़ गए और नटखट बंदर उनके बीच में फँस कर वहीं मर गया।

करटक ने यह कहानी बता कर कहा, "इसलिए मैं इस बात पर ज़ोर दे रहा हूँ कि तुम अनावश्यक विषयों में हस्तक्षेप मत करो। अरे पागल! हम यहाँ राजा नहीं हैं, अपनी इच्छानुसार कार्य करने का हमें कोई हक नहीं है। प्रभु जो आहार खा कर छोड़ देते हैं, उसे खाकर हम आराम से अपना जीवन बिता रहे हैं। हमें यहाँ कोई असुविधा नहीं होती अब तुम इसे भी खोने की कोशिश क्यों कर रहे हो।"

(शेष अगले अंक में)

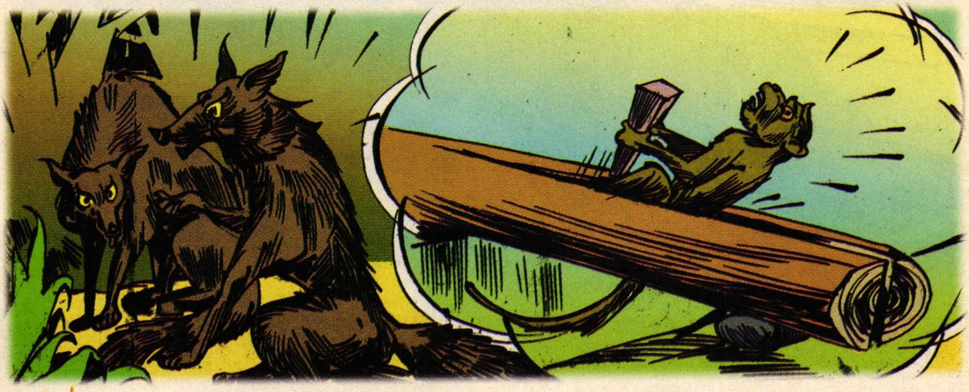

Sun | सूरज | सूर्य | Assamese | हूर्ज्य

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

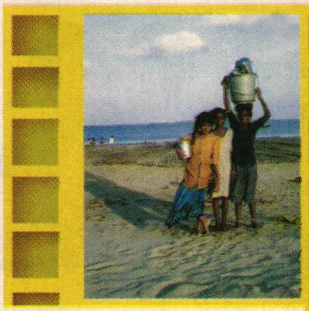

NARAYANAMURTHY TATA

NARAYANAMURTHY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, २/५१३ (पुराना नं. ३/३९६), संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेईन रोड़, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

ज्योती उत्तमराव चौधरी
C/o. श्री उत्तमराव चौधरी
उस्मानपुरा पोस्ट ऑफिस
औरंगाबाद - ४३१ ००५
महाराष्ट्र

विजयी प्रविष्टि

कुत्तों से है मुझे प्यार।
बहना हमारी है होशियार॥

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी- ९ अक्तूबर २००९ उत्तर:

१. ईद-उल-फ़ितर; २. पटोटी (नवरोज़); ३. ओणम;
४. पांग ल्हाबसोल; ५. पुष्कर मेला; ६. करवा चौथ।

नोट: कोई भी पूर्णतः सही प्रविष्टि नहीं मिली अतः किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

Sun सूरज സൂര്യൻ Malayalam सूर्यन

तेज़ फार्मूला

इस महीने का प्रश्नः

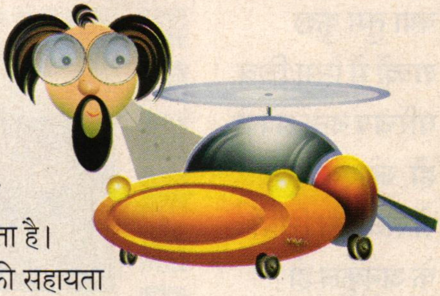

एक वैज्ञानिक ने एक ऐसा वाहन तैयार किया जो ज़मीन पर यात्रा कर सकता था तथा हवा में उड़ सकता था। वाहन ज़मीन पर यात्रा करते समय ७ घंटे ४७ मिनट में ८४२ किलो मीटर की दूरी तथा हवा में यात्रा करते समय ६ घंटे ३४ मिनट में २००० किलो मीटर की दूरी तय करता है। कुल मिलाकर वाहन की गति क्या है? बिना किसी यंत्र की सहायता के इस प्रश्न का हल निकालने का तीव्रतम सूत्र बताओ।

नोटः इसका हल फरवरी'१० महीने के अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

सबसे तेज़ सूत्र देने वाले को ५००/- रुपए का इनाम मिलेगा।

एक से अधिक सही प्रविष्टियाँ होने पर सफल प्रतिभागियों में प्रत्येक को १००/- रुपए दिए जाएँगे।

अपने प्रवेश फार्म ३१ दिसंबर के पहले इस पते पर भेजेंः

संपादक, चन्दामामा इण्डिया लिमिटेड, *२/५१३, संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेन रोड, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.* या ई-मेल करेंः contests@chandamama.com

---

हमें अक्तूबर महीने के सवाल हेतु बहुत सी प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं। यहाँ प्रस्तुत है इसे हल करने का सही तरीकाः

स्टेप १: आइस्क्रीम की कुल संख्या जोड़िए : २५+४५+३०+५३+२८+३२=२१३

स्टेप २: जहाँ आइस्क्रीम विक्रेता को उसका सामान भेजना है उन जगहों की कुल संख्या जोड़िए : ४+३+२=९

यह जानने के लिए कि आइस्क्रीम विक्रेता कितनी आइस्क्रीम घर लेकर गया था, आपको आइस्क्रीम की कुल संख्या को जगहों की कुल संख्या द्वारा विभाजित करना होगा। जैसे २१३/९।

जब भी ३-अंकों की संख्या ९ से विभाजित की जाए तो इन स्टेप्स पर चलिएः

a. LHS के भागफल की तरह सैकड़े के अंक को विभाज्य के स्थान पर रखिए। जैसेः२१३ में से २।

b. RHS के भागफल की तरह इकाई तथा दहाई की जगह के अंकों को जोड़ कर परिणाम लिखिए। जैसेः १+३=४।

c. आपका भागफल हो गया २४ इसे एक तरफ रखिए।

d. अब विभाज्य के तीनों अंकों को जोड़िए। यह विभाज्यशेष है। २+१+३=६।

लंबी प्रक्रिया से विभाजन करिए तथा अपने उत्तर की जाँच कीजिए। भागफल २३.६ आएगा (अर्थात् पूर्णांक २४ होगा) और ६ विभाज्यशेष होगा। आश्चर्यजनक है न?

क्योंकि ६ आइस्क्रीम बची हैं अतः प्रत्येक बच्चे को ६/२ या ३ आइस्क्रीम मिलेंगी।

अक्तूबर'०९ प्रतियोगिता के विजेता हैं :

रुचि प्रिया दत्ता, नागपुर, शुभंकर बनर्जी, दिल्ली

Sun सूरज Santali शिञ चान्दो

एक प्लास्टिक के थैले के अंदर जैविक समुदाय

पर्यावरण के लिए कुछ कीजिए और अपना एक जंगल उगाइए।

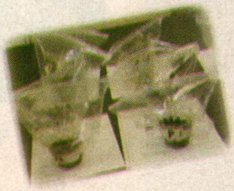

आपको क्या चाहिए:

- साफ प्लास्टिक कंटेनर
- रिसीलेबल/ज़िप लॉक प्लास्टिक बैग
- चिकने पत्थर और गमले की मिट्टी
- बीज/अंकुरित बीज
- पानी

कैसे करें:

- प्लास्टिक का जार लीजिए और चिकने पत्थरों की एक आधा इंच की सतह बनाते हुए इसके तले में डालिए।
- चिकने पत्थरों के ऊपर गमले की मिट्टी डालिए। आपके बायोम में चिकने पत्थरों से लगभग दोगुनी मिट्टी होनी चाहिए।
- मिट्टी में अपनी अंगुली से छोटे-छोटे गड्ढे बनाइए तथा बीज डालिए। थोड़ी और मिट्टी से उन्हें ढक दीजिए।
- मिट्टी में इतना पानी डालिए कि पानी चिकने पत्थरों के तल तक इकट्ठा हो जाए।
- बायोम को एक साफ ज़िप लॉक प्लास्टिक बैग में रखिए और बन्द कर दीजिए। इसे धूप में रख दीजिए।
- तकरीबन एक हफ्ते में आप पौधों को उगते हुए देख पाएँगे। अपने बायोम की विभिन्न परिस्थितियों में जाँच करें।
- तुम्हें इसे दोबारा पानी देने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी क्योंकि यह स्वयं को रिसाइकिल कर लेगा!

अवधारणा:

आपके लघु रूप बायोम में तीन प्रक्रियाएँ संपन्न होती हैं- वाष्पीकरण, संघनन तथा अवक्षेपण। जैसे-जैसे बीज विकसित होते हैं, जड़ें पानी अवशोषित करती हैं और पौधे बढ़ते हैं। पानी पत्तियों व मिट्टी से वाष्पीकृत होता है। पानी बैग में छोटी-छोटी बूँदों के रूप में दिखाई देता है। यह संघनन है। बूँदें वापस बारिश की तरह मिट्टी पर गिरती हैं और यह है अवक्षेपण। इस प्रकार बैग में बायोम स्वयं को बनाए रखता है!

Sun सूरज सूर्यः Sanskrit सूर्यः

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-११

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by Infosys *FOUNDATION, Bangalore*

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

**यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।*

तुम्हें क्या करना चाहियेः

१. एक कागज पर उत्तरों को लिखो।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।

३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-११** लिखो।

४. तुम्हारे उत्तर ३१ दिसम्बर तक हमें मिल जाने चाहिये।

५. सही उत्तर फरवरी २०१० के अंक में प्रकाशित होंगे।

क्रिसमस मनाने का समय!

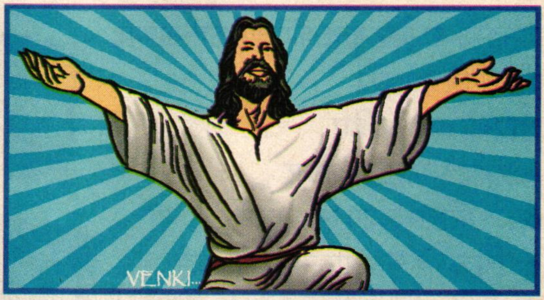

१. किस का जन्मदिन क्रिसमस के रूप में मनाया जाता है?

२. सान्ता क्लॉज़ के रथ को कौन से जानवर खींचते हैं?

३. ईसाइयों की पवित्र ग्रन्थ का नाम बताइए।

४. क्रिसमस गीत "जिंगल बैल्स" में किस मज़ेदार सवारी का ज़िक्र किया गया है?

५. "क्रिसमस कैरोल" किसने लिखा और यह सबसे पहले कब प्रकाशित हुआ?

६. तीन बुद्धिमान व्यक्ति किस नाम से जाने जाते थे?

७. पहले के गिरजाघरों ने २५ दिसम्बर को क्रिसमस दिवस क्यों निश्चित किया?

८. सबसे पहले किस व्यक्ति ने क्रिसमस पेड़ को मोमबत्तियों से जगमगाया?

चन्दामामा को अपनायें!

आप अपने न्यूज़पेपरवाले से चन्दामामा को नियमित रूप से देने के लिए अनुरोध करें। आप इसे आम न्यूज़-स्टैंड या प्रधान बुकशॉप से भी पा सकते हैं। चन्दा के लिए www.chandamama.com लॉग करें अथवा CSHOP 54646 को SMS भी कर सकते हैं।

Teacher अध्यापक ఉపాధ్యాయుడు **Telugu** उपाध्यायुडु

गैरहाज़िरी का समझौता

कामेश के घर अचानक दस रिश्तेदार आ गए। एक महीने तक उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए नौकरों की आवश्यकता थी। जब मुकुन्द को यह मालूम हुआ तो वह उससे मिलने आया।

वैसे तो मुकुन्द अच्छा आदमी था, पर उसकी एक बुरी आदत थी। जहाँ वह काम करता था, वह बीच में ही छोड़ देता था और किसी और के यहाँ काम करने चला जाता था। इसलिए कोई भी उसे स्थायी रूप से नौकर नहीं रखता था।

अपने यहाँ काम पर लेने के लिए कामेश साधारणतया अनेकों शर्तें रखता था। अब चूँकि रिश्तेदारों की देखभाल की ज़रूरत थी अतः मुकुन्द के विषय में थोड़ा नरम पड़ गया और उससे कहा, ''अगर बीच में किसी दिन गैरहाज़िर रहोगे तो एक दिन की गैरहाज़िरी के लिए दो दिन का वेतन खोना पड़ेगा।''

मुकुन्द ने शर्त मान ली और कहा, ''रिश्तेदारों के चले जाने के बाद भी आप मुझे नौकरी से नहीं हटाना अथवा आपको मुझे कहीं और नौकरी दिलानी होगी। यदि आप इस प्रकार का वसीयत-नामा लिखित रूप में देने को तैयार हों तो ही आपके यहाँ नौकरी करूँगा।''

कामेश ने सोचा कि एक नौकर के लिए वसीयतनामे का क्या मूल्य होगा, उसने उसकी शर्त मान ली। रिश्तेदारों के चले जाने के पश्चात् इसे नौकरी से हटा दूँगा और यों मैं अभी अपना काम चला लूँगा। उसने वसीयतनामा लिख कर उसे दे दिया।

मुकुंद ने एक हफ्ते तक काफी मेहनत की और रिश्तेदारों की प्रशंसा भी पायी। इसके बाद अपनी आदतानुसार एक महीने में वह दस दिनों तक गैरहाज़िर रहा और अपनी शक्ल तक न दिखाई।

रिश्तेदारों के जाने के बाद कामेश ने उससे कहा, ''तुम्हारी गैरहाज़िरियाँ मुझे ठीक नहीं लगीं। आज ही मैं तुम्हें नौकरी से निकालता हूँ। किसी और के यहाँ नौकरी पर लगा नहीं सकता।''

Teacher	अध्यापक	ஆசிரியர்	Tamil	आसिरियर

''अपने वादे से मुकरना मुझे सही नहीं जँचता।'' उसने साफ-साफ कह दिया, ''मैं नौकरी से नहीं हटूँगा। आप बिना कोई दूसरी नौकरी दिलाए मुझसे छुटकारा नहीं पा सकते।''

''तो ठीक है। ग्रामाधिकारी के पास जाओ और मेरी शिकायत करो। वह तो मेरा दोस्त है। उस पर तुम्हारी शिकायत का कोई असर नहीं पड़ेगा।'' कामेश ने उसे धमका दिया।

मुकुंद को मालूम था कि शिकायत का कोई फायदा नहीं होनेवाला, इसलिए उसने कह दिया, ''मैं यहाँ से किसी भी हालत में नहीं हटूँगा। चाहे जा कर ग्रामाधिकारी से शिकायत करना।''

दोनों अपनी-अपनी बात पर अडिग थे। आस-पड़ोस के सब लोग झगड़ा देखने वहाँ पहुँच गए पर सब बात जान कोई भी बीच में नहीं आया क्योंकि कोई भी निर्णय नहीं कर पा रहा था कि किस का पक्ष लेना चाहिए। तभी उसका पड़ोसी राघव, जिसको कामेश सदा अपमानित करने तथा नीचा दिखाने की कोशिश में रहता था, वहाँ आया। वह स्वभाव से ही सज्जन व भला मानुस था। उसने स्थिति को समझकर अपने पड़ोसी कामेश की मदद करने के इरादे से कहा, ''जो वसीयतनामा लिखा गया है उसी का पालन करना होगा।''

यह सुनते ही कामेश का चेहरा तमतमा गया। परंतु समय विपरीत देख कर अपने क्रोध को काबू में करते हुए बोला, ''ठीक है, तब तुम मेरे पड़ोसी हो इसलिए मैं तुमसे मदद माँग रहा हूँ। तुम ही मुकुंद को काम पर रख लो।'' कामेश ने दुर्भावना को छिपाते हुए मदद की गुहार के रूप में चुनौती दी।

कामेश ने सोचा राघव इस प्रस्ताव को ठुकरा कर पीछे हट जाएगा। किन्तु उसकी सोच के ठीक विपरीत राघव ने बिना समय गँवाए तुरंत ही कहा, ''ठीक है, ऐसा ही होगा। मुझे भी नौकर की आवश्यकता है। वह गैरहाज़िर भी हो सकता है मैं कुछ नहीं कहूँगा व काम से भी नहीं निकालूँगा। परंतु जब मैं चाहूँगा उसे उस दिन गैरहाज़िर रहना होगा और उस दिन का वेतन मैं उसे नहीं दूँगा। इस प्रकार का पत्र लिख कर यदि मुकुंद मुझे दे देगा तो मैं उसे नौकरी पर रखने को तैयार हूँ।''

मुकुंद ने सोचा कि ग्रामाधिकारी के पास यह मामला ले जाने से कुछ नहीं होने वाला। पर यहाँ

Teacher अध्यापक শিক্ষক Bengali शिक्षक

स्थिति कहीं अधिक बेहतर है क्योंकि राघव मुझे आगे बढ़ कर लेने को तैयार है। शिकायत करने के बदले यह समझौता ही उचित होगा। यह सब सोचते हुए उसने बिना किसी हील-हुज्जत के वैसा ही पत्र लिखकर दे दिया और राघव के यहाँ काम करने लगा।

कामेश ने मन ही मन सोचा कि चलो कैसे भी सही मुकुंद से पिंड तो छुटा। गाँव के लोग राघव की अच्छाई और परोपकारी स्वभाव की प्रशंसा करने लगे। कामेश को यह सब अच्छा न लगा। उसने उनसे कहा, ''यह उसका परोपकार नहीं मूर्खता है। पड़ोसी होने के नाते मेरी सहायता करने में उसने अक्ल से काम नहीं लिया। जल्द ही मुकुंद से छुटकारा पाने का उपाय अब हम ही से पूछने आने वाला है।'' कामेश ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

कामेश के कहे मुताबिक ही मुकुंद राघव के लिए भारी पड़ने लगा। मुकुंद ने हफ्ते भर तो ठीक काम किया। फिर उसके गैरहाज़िर होने का सिलसिला शुरू हो गया। राघव ने कई बार उसे डाँटा, पर कोई प्रभाव नहीं हुआ।

आखिर राघव ने एक दिन मुकुंद से कहा, ''पिछले महीने में तुम तेरह दिन तक गैरहाज़िर रहे। अब मेरी इच्छा के अनुसार इस महीने में मेरे यहाँ एक ही दिन काम करना और बाकी दिन काम पर मत आना।''

मुकुंद को उसकी बातों पर कोई कष्ट नहीं हुआ। उसने समझा नाराज़गी में यूँ ही कह दिया होगा।

Teacher अध्यापक शिक्षक Marathi शिक्षक

चार दिन लगातार गैरहाज़िर रहूँगा तो विवश होकर स्वयं ही बुलाएँगे।

उधर कामेश लोगों से कहने लगा, ''देखा मैंने जो कहा था, वह सच निकला, न!''

किन्तु इसी बीच राघव ने अपने घर के कामों के लिए एक नौकर रख लिया। यह बात मालूम होते ही मुकुंद, कामेश और गाँव के कुछ लोगों को लेकर राघव के घर पहुँचा। समझौते को तोड़ने पर उसकी निंदा की। कामेश ने भी मुकुंद के समर्थन करते हुए कहा, ''किसी और को तुमने नौकरी पर रख लिया इसका मतलब यही हुआ न कि तुमने मुकुंद को नौकरी से निकाल दिया। उस समय तुमने मुझसे क़हा था कि गैरहाज़िर होने पर भी मैं इसे निकालूँगा नहीं और अब यह क्या कर रहे हो? तुम्हारा यह व्यवहार कतई न्यायसंगत नहीं है।''

राघव ने हँसते हुए गाँव वालों से कहा, ''मैंने मुकुंद को काम से नहीं निकाला है। मैंने उससे इस माह में एक ही दिन काम करने के लिए कहा और यह भी कहा कि बाकी दिन गैरहाज़िर रहना। हमारे बीच ऐसा कोई समझौता नहीं हुआ था कि किसी और को काम पर रखने का मुझे कोई हक नहीं। मैंने यह सब अपने लिए नहीं किया। मुकुंद से छुटकारा पाने के लिए कामेश ने मेरी सहायता माँगी और मैंने मुकुंद की बदमाशी को काबू में करने के लिए इस समझौते में थोड़ी सी फेर बदल की जिससे कि इस की चालाकी में मैं स्वयं न फँस जाऊँ। इस पर भी कामेश, जिसने मेरी सहायता प्राप्त करते हुए मुकुंद से छुटकारा पाया, किसी हालत में बोलने का हक नहीं रखता।''

वहाँ उपस्थित सभी लोगों को उसकी बातें सही लगीं। उन्होंने कहा, ''बड़ी ही होशियारी से इसने मुकुंद तथा कामेश दोनों को पाठ सिखाया है। इस सब मामले में इसके सभी दोष निराधार साबित होते हैं।'' लोगों की बातें सुन कर कामेश को भी अपनी गलती का अहसास हुआ और अपना सा मुँह लेकर वह सिर झुकाए वहाँ से चला गया।

मुकुंद ने राघव से माफी माँगी और विदा ली। वह जानता था कि अब उसकी दाल यहाँ नहीं गलने वाली। एक और बार अपमानित हुए कामेश ने जान लिया कि बुद्धिमान व सज्जन राघव सही मायने में उसका पड़ोसी है। यह सोचते हुए कामेश ने राघव की ओर से अपना मन साफ कर लिया।

Teacher अध्यापक ಉಪಾಧ್ಯಾಯ Kannada उपाध्याय

निराई की मजदूरी

सिरिपुर गाँव में धर्मदास नामक एक किसान रहता था। वह अपनी दो एकड़ ज़मीन जोत-बोकर अपने परिवार के लिए आवश्यक फसल पैदा कर लेता था, साथ ही वह यथा शक्ति दूसरों की मदद किया करता था, पर कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता था।

धर्मदास के पड़ोस में भद्रदास नामक एक दूसरा किसान रहता था जिसके पास पच्चीस एकड़ बढ़िया ज़मीन थी। पर वह फसलों की आमदनी से संतुष्ट न होकर महाजनी भी किया करता था। वह गरीबों को चूसकर ज़्यादा ब्याज वसूल किया करता था। गरीब लोग भद्रदास को जोंक कहकर पुकारा करते थे।

गाँव का मुखिया भद्रदास का दोस्त था। मुखिया दोस्त का सहारा पाकर भद्रदास गाँववालों के साथ मनमाने ढंग से अत्याचार किया करता था। सिरिपुर के लोग अधिकतर गरीब थे। इसलिए उनके साथ जो भी अत्याचार होते थे, वे चुपचाप सहन कर लेते थे।

एक दिन भद्रदास के मवेशियों ने धर्मदास के खेत में घुस कर उसकी सारी फसल नष्ट कर दी। पर धर्मदास जानता था कि मुखिया से शिकायत करने का कोई फायदा न होगा, इसलिए चुप रहा।

मगर भद्रदास इस पर भी अपनी दुष्टता दिखाने से नहीं चूका। उसने उल्टा मुखिया के पास जाकर शिकायत की कि धर्मदास ने उसके मवेशियों को बुरी तरह से पीट कर अधमरा कर दिया है। मुखिया ने भद्रदास से घूस लेकर धर्मदास को कचहरी में बुलवा भेजा। धर्मदास को देख कर मुखिया ने पूछा, "धर्मदास, मैंने सुना है कि तुमने भद्रदास के मवेशियों को पीटा है। इसकी कैफियत दो!"

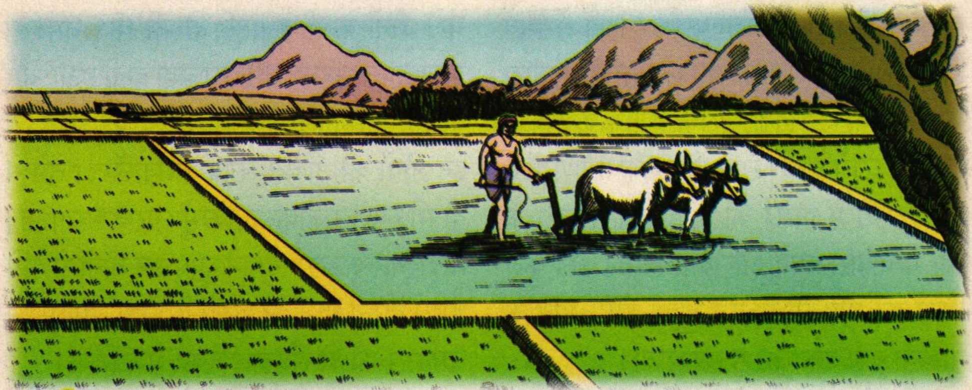

Teacher अध्यापक ଶିକ୍ଷକ Oriya सिख्यक

मुखिया की बात सुन कर धर्मदास ने समझाया, ''वास्तव में बात यह है कि भद्रदास के मवेशियों ने मेरे खेत में घुस कर मेरी फसल नष्ट कर दी। मैंने उनको अपने खेत से ज़रूर भगाया है लेकिन मैंने उन्हें पीटा नहीं है। नुकसान उठानेवाले मुझ ही पर आरोप लगाना ठीक नहीं है!''

''वाह! तुम मुझको न्याय सिखाने चले आये हो? मैं चाहूँ तो तुम्हारा सिरिपुर में रहना ही असंभव हो जाएगा। मेरा फैसला सुन लो! तुमने भद्रदास के मवेशियों को पीटा, इसके हर्जाने के रूप में तुम उसे रुपये दे दो। साथ ही उसके मवेशियों ने तुम्हारे खेत में निराई की है, इसकी मजदूरी के रूप में पचास रुपए और देना होगा। अब कुल मिला कर एक सौ पचास चुका दो!'' गाँव के मुखिया ने कड़क स्वर में समझाया।

धर्मदास को लगा कि उसे पागल बनाया जा रहा है। उसने पूछा, ''मवेशियों द्वारा निराई करना कैसे संभव है?''

''भद्रदास के मवेशियों ने तुम्हारे खेत में सिर्फ घास ही चरी है इसलिए तुम्हें मजदूरों द्वारा निराई करवाने की ज़रूरत ही नहीं रह गई है। इसलिए तुम मजदूरों को निराई के लिए जो मजदूरी देते हो, वह भद्रदास के मवेशियों को मिलनी चाहिए।'' मुखिया ने बताया।

धर्मदास ने विस्मय में आकर पूछा, ''मवेशियों को क्या पता कि फसल के पौधे कौन से हैं और घास के पौधे कौन से हैं? यह कैसा अनोखा न्याय है?''

मुखिया ने क्रोध में आकर कहा, ''तुमने मेरे फैसले की अवहेलना की है, इस अपराध में तुम कचहरी में कल शाम तक पचास रुपए जुर्माना जमा करो वरना तुम्हें सजा भुगतनी पड़ेगी।''

धर्मदास रोनी सूरत बना कर कचहरी से सीधे रामदास के घर पहुँचा उसे सारी कहानी सुनाई।

रामदास भी धर्मदास जैसा ही सज्जन व्यक्ति था। दोनों के बीच गहरी दोस्ती थी। धर्मदास का वृतान्त सुनकर रामदास बड़ा दुखी हुआ और बोला, ''तुम्हारे साथ बड़ा ही अन्याय हुआ है। मैं इन लोगों को उचित सबक सिखाऊँगा। तुम ये दो सौ रुपए ले जाकर उनके मुँह पर फेंक आओ। मैं देखूँगा कि इससे दोगुने रुपए उन लोगों से कैसे वसूल करना है!'' इन शब्दों के साथ रामदास ने धर्मदास को दो सौ रुपए देकर भेज दिया।

Teacher अध्यापक શિક્ષક Gujarati शिक्षक

दूसरे दिन रामदास ने अपने मवेशियों को ले जाकर गाँव के मुखिया के खेत में हाँक दिया और मवेशी खेत में चरने लगे। मुखिया के नौकरों ने जाकर यह खबर दी तो मुखिया भागा हुआ खेत पर आया। उसने आकर देखा कि रामदास सारा खेत चरवाकर अपने मवेशियों को पानी पिला रहा है।

''रामदास, मैंने सुना है कि तुमने मेरे खेत में अपने मवेशियों को चराया है। इसका तुम क्या जवाब देते हो?''

''क्या मैंने तुम्हारे खेत में मवेशियों को चराया है? किसी ने झूठ-मूठ शिकायत की होगी!'' रामदास ने जवाब दिया।

''मेरे नौकरों ने अपनी आँखों से देखा है। तुमने जो काम किया, इसका हर्जाना देना होगा।'' मुखिया ने धमकी भर स्वर में उत्तर दिया।

''आप जो कुछ करना चाहते हैं, कर लीजिए; मैं हर्जाना न दूँगा।'' रामदास ने कड़ा उत्तर दिया।

''अच्छी बात है। इस बात का फैसला अदालत में होगा।'' यों कहकर मुखिया शहर में चला गया और वहाँ न्यायाधिकारी से मिलकर शिकायत की कि रामदास ने उसके खेत में दस एकड़ ज़मीन की फसल बरबाद की है अतः इसका हर्जाना दिलवाइए। रामदास को ख़बर मिली कि दूसरे दिन ही उसे अदालत में हाज़िर होना है फिर क्या था, रामदास धर्मदास को साथ लेकर नियत समय पर अदालत में पहुँचा।

''आप धर्मदाता हैं। न्याय कीजिए। इसके

Teacher	अध्यापक	শিক্ষক	Assamese	हिख्खक

पहले दो एकड़ खेत में मवेशियों से निराई कराने के एवज में मुखिया ने भद्रदास को धर्मदास से निराई की मजदूरी के रूप में पचास रुपए दिलवाए हैं तो दस एकड़ ज़मीन के लिए और अधिक रुपए मुझे मिल सकते हैं न? यही सोच कर मैंने उनके खेत में अपने मवेशियों को निराई करने के लिए हाँक दिया। अब इनके खेत में निराई हो चुकी है अतः न्यायपूर्वक मेरे मवेशियों को निराई की मजदूरी मिलनी चाहिए न? मैं उन मवेशियों का मालिक हूँ इसलिए आपसे निवेदन करता हूँ कि वे रुपए मुझे दिलवा दें।'' रामदास ने हाथ बाँध कर अर्ज किया।

न्यायाधिकारी समझ गया कि दाल में ज़रूर कुछ काला है। वह तुरंत ही बोला, ''रामदास मुझे सब बातें विस्तार से बताओ। आखिर यह भद्रदास कौन है?''

रामदास ने कहा, ''धर्मदाता, भद्रदास और मुखिया बहुत ही गहरे मित्र हैं जिन्होंने मिलकर मेरे सीधे सरल मित्र धर्मदास को एक योजनाबद्ध तरीके से लूटा है वह भी एक मुकदमा चला कर।''

आगे रामदास ने कहा, ''आगे मेरे मित्र स्वयं अपनी जुबानी बता सकें कि किस प्रकार कचहरी में उन्हें धन देने के लिए मजबूर किया अतः उन्हें मैं अपने साथ ही लाया हूँ।''

धर्मदास बोला, ''न्यायदेव, अपनी फसल को बचाने के लिए मैंने भद्रदास के मवेशियों को अपने खेत से निकाला। इन दोनों मित्रों ने मिलकर कचहरी में मुकदमा चलाया कि मैंने भद्रदास के मवेशियों को पीट कर अधमरा कर दिया। जब मैंने सत्य कहा तो मुझे मवेशियों द्वारा की गई निराई की मजदूरी तथा मवेशियों को पीटने के लिए हर्जाना देने के लिए कहा गया तथा उसकी कैफियत तलब करने पर मुझे कचहरी में जुर्माना समेत कुल दो सौ रुपये जमा करने को कहा गया।''

न्यायाधिकारी ने असली बात भाँप ली। धर्मदास के मुँह से सारी बातें जानकर धर्मदास को भद्रदास द्वारा दो सौ रुपये तथा फसल हेतु अतिरिक्त हर्जाना दिलवाया। मुखिया को उस पद से हटाकर उसकी जगह रामदास को नियुक्त किया।

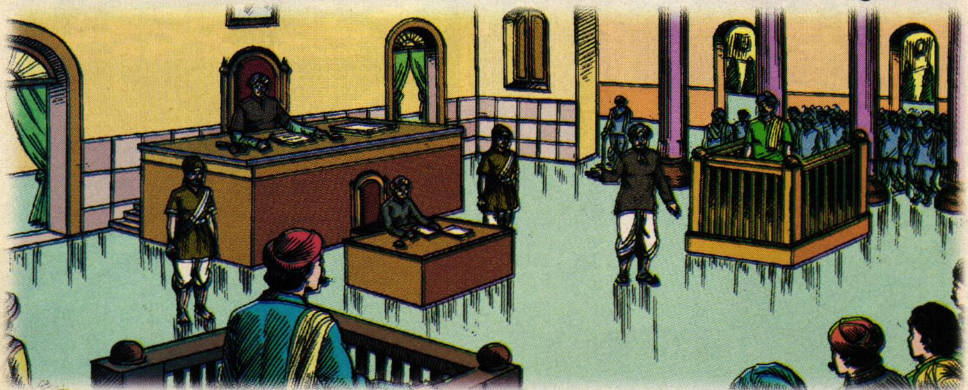

गद्दी का असली हकदार

राजपुर का राजा था जयमल। उसकी कोई संतान नहीं थी। एक अच्छे उत्तराधिकारी हेतु तीन नवयुवकों को चुना जिनके नाम थे सूर्यसेन, चन्द्रसेन और वीर्यसेन। हालांकि उसने यह घोषणा नहीं की थी कि वो इन्हीं में से किसी को राजा बनाएगा, परंतु प्रजा यह समझ चुकी थी और बड़ी जिज्ञासा से देख रही थी कि राजा इनमें से किसको चुनता है।

लेकिन जयमल इतनी जल्दी कोई निर्णय नहीं चाहता था। उसने उन्हें आजमाने हेतु सूर्यसेन को अपने राज्य के उत्तर में बसे चन्द्रपुर की देखभाल करने को कहा, चन्द्रसेन को पूर्वी सीमा पर बसे रुद्रपुर की देखभाल करने का काम सौंपा और दक्षिण में स्थित कृष्णपुर को वीर्यसेन के हवाले किया तथा प्रत्येक को बीस हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ भी दीं और उनसे कहा कि वो पाँच साल के पश्चात् उनके नगरों का भ्रमण करेगा।

सूर्यसेन की राजा बनने की प्रबल इच्छा थी। इसलिए वो ऐसे ही कार्य करता जो राजा को एकदम नजर आएँ। उसने राजा द्वारा दी हुई स्वर्ण मुद्राएँ नगर के सौंदर्यीकरण में लगा दीं। उसने जगह-जगह राजा जयमल के पुतले लगाए। सूर्यसेन ने नगर में बड़ी-बड़ी इमारतें भी बनवाईं। जयमल के नाम पर उसने एक विशाल महल भी बनवाया। इतना बड़ा महल जयमल के राज्य में क्या आसपास भी नहीं था। यह महल देखने दूर-दूर से लोग आने लगे।

सूर्यसेन ने महल में बड़े-बड़े कवियों, लेखकों और चित्रकारों को भी पनाह दी। यह सब जयमल की तारीफ़ में कविता रचते, लेख लिखते और उसके चित्र बनाते।

उधर चन्द्रसेन जब रुद्रपुर पहुँचा तो उसने देखा कि राज्य की यह सीमा सुरक्षित नहीं है। इस तरफ से अकसर उनका पड़ोसी राजा भूपेंद्र राजपुर पर चढ़ाई करता था। चन्द्रसेन ने अपना सारा ध्यान राज्य की सुरक्षा पर लगा दिया। उसने

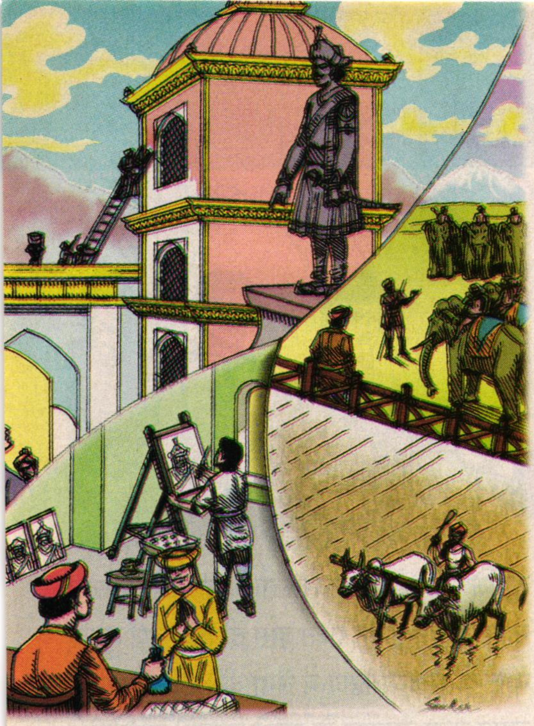

एक बलवान सेना तैयार की जिसमें अच्छी नस्ल के घोड़े और हाथी भी लिए और अच्छे अस्त्र-शस्त्र भी। इसी बीच भूपेंद्र ने एक बार फिर राजपुर पर चढ़ाई कर दी। इस बार राजा जयमल को रुद्रपुर तक आना भी नहीं पड़ा। अकेले चन्द्रसेन ने भूपेंद्र को ऐसी मात खिलाई कि वो घबराकर भाग गया। इस लड़ाई में उसका इतना नुकसान हो गया था कि अब भूपेन्द्र में राजपुर की तरफ आँख उठाने की हिम्मत नहीं थी पर इस लड़ाई के बाद कई मंत्री जयमल से चन्द्रसेन को उत्तराधिकारी बनाने की सिफारिश करने लगे।

उधर वीर्यसेन जैसे ही कृष्णपुर पहुँचा, उसने सबसे पहले शहर का जाएज़ा लिया। फिर उसने अपनी बीस हजार मुद्राओं को चार भाग में बाँट दिया। पहले भाग को उसने बुरे वक्त के लिए सँभाल के रख दिया। दूसरे हिस्से को उसने जन-कल्याण हेतु उपयोग में लाने की सोची। इन पैसों से उसने चौड़े रास्ते बनवाए। रास्ते में बीच-बीच में उसने बड़े वृक्ष उगाए ताकि यात्रियों को आराम करने में सुविधा हो। उसने उनके ठहरने के लिए कुछ धर्मशालाएँ भी बनवाईं। इसके अलावा सब जगह लोगों को पानी मिले इस उद्देश्य से उसने कई कुएँ खुदवाए। उसके नगर में किसी बुज़ुर्ग को अथवा बीमार को रुआँसा नहीं होना पड़ता था क्योंकि वो हर सुविधा प्रदान करता था। उसने बच्चों के अच्छे शिक्षण के लिए भी कई योजनाएँ चलाईं।

पैसों के एक भाग को उसने सुरक्षा में भी लगाया। उसने अपनी एक छोटी लेकिन ताकतवर सेना बना ली। यह सेना लोगों को लूटपाट एवं चोरियों से भी बचाती। इससे लोगों में भय जाता रहा और वो सुरक्षित महसूस करने लगे जिसकी वजह से वो राज्य की समृद्धि बढ़ाने के कार्य में लग गए।

वीर्यसेन ने स्वर्ण मुद्राओं के चौथे हिस्से को एक व्यापारी की तरह पैसे बढ़ाने के कार्य में लगा दिया। इन पैसों से उसने कुछ खेत खरीद लिए। खेत पर कौनसी फसल अच्छी होगी इसकी जाँचकर वो उनपर आम, गन्ने, गेहूँ, चावल, इत्यादि की फसल करवाता। उसने इस कार्य के लिए ऐसे लोगों को चुना था जिनके पास कमाई का कोई जरिया नहीं था। इस तरह लोगों को

Teacher अध्यापक शिक्षकः Sanskrit शिक्षकः

कार्य भी मिल गया और सरकारी कोष में बढ़ोत्तरी भी होने लगी।

पाँच साल के बाद जहाँ सूर्यसेन और चन्द्रसेन के पास कुछ भी पैसे नहीं बचे थे, वहाँ वीर्यसेन के पास करीब पचास हजार स्वर्ण मुद्राएँ थीं।

राजा जयमल ने पाँच साल बाद तीनों नगर का भ्रमण किया और तीनों द्वारा किए गए प्रयासों को देखा और परखा।

वापस पहुँचने पर उन्होंने एक दिन दरबार बुलाया। सबसे पहले उन्होंने सूर्यसेन से कहा, ''तुमने प्रजा के हित में और मेरी प्रशंसा में जो कार्य किए वो बड़े ही सराहनीय हैं। तुम राज्य में जनहितकारी योजनाएँ अच्छे से चलाओगे यह मैं जानता हूँ और तुम्हें लोक कल्याण मंत्री नियुक्त करता हूँ।''

फिर जयमल ने चन्द्रसेन की ओर देखते हुए बोले, ''तुम्हारी सुरक्षा योजना का सचमुच कोई तोड़ नहीं है। जब से तुमने रुद्रपुर की देखभाल सँभाली मुझे सुरक्षा की तरफ देखना भी नहीं पड़ा। मैं तुम्हें राज्य का आज से सेनापति नियुक्त करता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि जब तक तुम सेनापति रहोगे, दुश्मन हमारी तरफ आँख उठाकर देखेगा तक नहीं।''

फिर सभी को संबोधित करते जयमल ने कहा, ''साथियों मुझे आप सबको यह बताते हुए बड़ी खुशी हो रही है कि वीर्यसेन मेरा उत्तराधिकारी होगा। उसमें वो सब गुण हैं जो राज्य को एक नियोजित तरह से चलाने के लिए जरूरी होते हैं।

उसने बढ़ोत्तरी की बातें तो सोची ही थीं, साथ में उसका ख्याल सुरक्षा और संरक्षण से भी नहीं हटा। उसने बुजुर्गों का भी ख्याल रखा और बच्चों का भी। उसने राज्यकोष में बढ़ोत्तरी की भी योजनाएँ कीं। मुझे पूरा भरोसा है कि वीर्यसेन एक अच्छा राजा साबित होगा।''

सब लोग राजा के फैसले को सुनकर खुश हो गए और महाराज की जयजयकार करने लगे।

कुछ सालों तक जयमल ने अपने साथ वीर्यसेन को राज्य को सँभालने की बारीकियाँ समझाईं। जयमल के पश्चात् वीर्यसेन एक बहुत ही कामयाब राजा साबित हुआ। ***- नीलम चंद्रा***

Birthday	जन्मदिन	పుట్టినరోజు	Telugu	पुट्टिनरोजु

ज़िम्मेदारी

रामपुर के ज़मींदार भुजंगराज की माता की आकस्मिक मृत्यु हुई। उनकी तीव्र इच्छा थी कि उनकी माता नैनादेवी की याद में उनके जन्मस्थल धर्मपुर में उसी वर्ष एक अस्पताल का निर्माण हो। उन्होंने दीवान से अपनी इच्छा को व्यक्त करते हुए कहा, ''माताजी की याद में मैं इस वर्ष के अंदर अस्पताल का निर्माण शुरू करवाना चाहता हूँ। एक वर्ष के ही अंदर इस काम को पूरा करने की ज़िम्मेदारी आप पर है।''

ज़मींदार की बतायी अवधि के अंदर अस्पताल के निर्माण का कार्य पूरा हुआ। प्रारंभोत्सव के समय ज़मींदार पत्नी समेत वहाँ आये। उन्होंने पूरे अस्पताल को ध्यान से देखा और कहा, ''यह निर्माण किसके अधीन पूरा हुआ है? रोगियों के सोने के कमरों में हवा ही नहीं आ रही है। सामग्री तितर-बितर पड़ी हुई है।''

''मैं अन्य कार्य में व्यस्त होने के कारण अस्पताल के निर्माण का कार्य विशेष रूप से मैंने अपने सहायक मणिकंठ को सुपुर्द किया। उसी ने अस्पताल के निर्माण कार्य का पर्यवेक्षण किया।'' दीवान ने मणिकंठ को दिखाते हुए कहा। नज़दीक आये मणिकंठ को ज़मींदार ने नाराज़ी से देखा।

''ज़मींदारजी, मैं माफ़ी चाहता हूँ। इस अस्पताल की रूपरेखाओं की निश्चित तारीख़ के बाद, बड़ों के पर्यवेक्षण में हज़ारों मज़दूरों ने दिन-रात परिश्रम किया और समय के अंदर निर्माण-कार्य पूरा किया। जहाँ तक मैं जानता हूँ, इस कार्य में कोई त्रुटि नहीं है। अगर आप साबित करते हैं कि इसमें त्रुटियाँ हैं, तो उसकी ज़िम्मेदारी मैं अपने ऊपर लेता हूँ। आप जो भी सज़ा देंगे, उसे सहने तैयार हूँ।'' मणिकंठ ने विनयपूर्वक कहा।

उसकी बातें सुनकर ज़मींदार का मुख खिल उठा। ज़मींदार ने मणिकंठ से कहा, ''प्रशंसा पाने के लिए लोग आते हैं, पर गलती जताने से बहुत-से लोग सह नहीं पाते। इस अद्भुत अस्पताल का निर्माण जिसने किया, उसे जानने के लिए ही मैंने ऐसी टिप्पणी की थी।'' उसके बाद ज़मींदार ने खुशी से मणिकंठ को हज़ार अशर्फ़ियाँ भेंद में दीं और उसका आदर-सत्कार किया।

- उमा श्रीधर

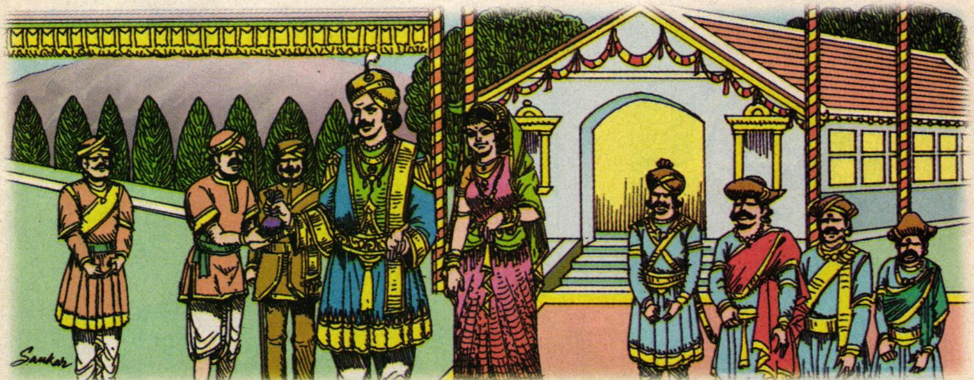

Birthday	जन्मदिन	பிறந்தநாள்	Tamil	पिरन्दनाल

Avail the Coolest Combo Pack!i

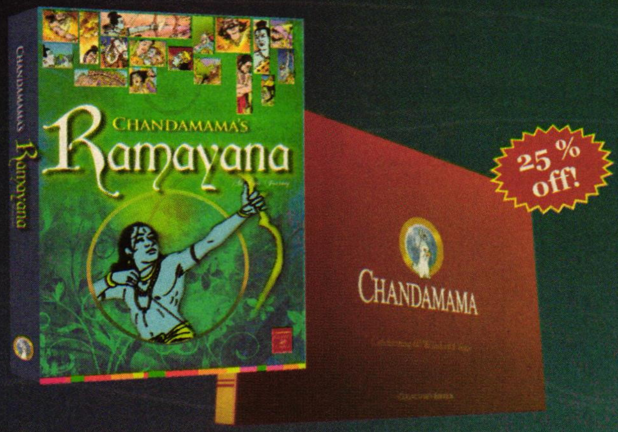

Buy Chandamama's Collector's Edition+Ramayana for Rs ~~898~~ 673* Only!

Chandamama's Ramayana is the first fully Illustrated Ramayana which comes in a single book.

Chandamama Collector's Edition features the best of Chandamama published over the last 60 years.

I want the Coolest Combo Pack:

Name........................ Subscriber No ....

Address........................

City .... State .... Pin ....

Telephone .... Mobile .... Email ....

Enclosed Cheque/DD for Rupees (in words) ....

Cheque/DD no .... Favouring Chandamama India Ltd

on .... bank. *(Send At-Par cheques or add Rs 60 for non-Chennai cheques)*

Please mail the order form to :

Chandamama India Limited, No. 2/513 (Old 3/396), Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelangarai, Chennai – 600 041. Phone: (044) 43992828

Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

Both these titles are available only in English at all leading bookshops.

To place an order go to www.chandamama.com

*For purchase outside India, the Coolest Combo Pack is available at $~~100~~ $80

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 20% off on subscription renewals! (All Editions)

Chandamama!

Because stories make the world go round...

Choose your Chandamama!

Go to www.chandamama.com or SMS CSHOP to 54646 & we'll get in touch with you!

Subscribe Now!!

Chandamama is available in English and 12 regional languages. Junior Chandamama for children below 9 years is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama:

☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Santali ☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior

Name: ....

Date of Birth: .... Sex :..........................

Address: ....

....

....

.... City: ....

State:.............................. Pin:..............................

Telephone:..

Mobile:..

Email:..

Subscription Number 9for renewals):..............................

Gift Subscription to the following address:

....

....

....

....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees..............................

Cheque/DD No ....

favouring Chandamama India Ltd on..............................

....bank.

*Add Rs.60 for non-Chennai cheques. Your subscription will commence in 4 weeks.

Please mail the subscription form to:
Chandamama India Limited,
New 2/513 (Old 3/396) Sundeep Avenue East,
2nd Main Road, Chinna Neelankarai,
Chennai - 600041. Phone: (044) 43992828, Fax: (044) 43992829
Email: subscription@chandamama.com
You can also subscribe online at: www.chandamama.com

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
ENGLISH (Rs. 25/- per copy)	Rs. 300	Rs. 540	Rs. 765	Rs. 960	Rs. 1125
You Save		Rs. 60	Rs. 135	Rs. 240	Rs. 375
REGIONAL (Rs. 20/- per copy)	Rs. 240	Rs. 430	Rs. 610	Rs. 770	Rs. 900
You Save		Rs. 50	Rs. 110	Rs. 190	Rs. 300
JUNIOR (Rs. 15/- per copy)	Rs. 180	Rs. 325	Rs. 460	Rs. 575	Rs. 675
You Save		Rs. 35	Rs. 80	Rs. 145	Rs. 225

Annual Subscription Overseas : US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

वीज़ा भगवान

बहुत से विकासशील देशवासियों का यह सपना होता है कि युनाइटेड स्टेट्स जाएँ। एक यू एस वीज़ा पाना बहुत और बहुत कठिन होता जा रहा है...लेकिन हमेशा की तरह भारत में इस समस्या के हल हैं- वीज़ा भगवान!

चिल्कुर बाला जी मंदिर, हैदराबाद से २५ किलो मीटर दूर विकाराबाद सड़क से थोड़ा हट कर ओस्मान सागर के तट पर स्थित है। प्रतिदिन हज़ारों की तादाद में यात्री इस मंदिर में भगवान बाला जी के आशीर्वाद पाने आते हैं। उनका विश्वास है कि जो इस मंदिर में यात्रा करता है उसका वीज़ा कभी भी निरस्त नहीं किया जाता। हर हफ्ते एक लाख भक्तगण इस मंदिर में माथा टेकने पहुँचते हैं।

ना काटने वाले बिच्छू

एक बिच्छू का डंक जानलेवा हो सकता है लेकिन कुछ ऐसे भी बिच्छू भी होते हैं जो कभी नहीं काटते। ये बिच्छू हैं एक सूफी पीर महात्मा शाह विलायत की पवित्र गुफा के, जो उत्तर प्रदेश के अमरोहा शहर में है। दूर दराज़ क्षेत्रों से लोग फकीर का आशीर्वाद लेने आते हैं। इन बिच्छुओं के पीछे एक कथा है। फकीर के जीवन काल के दौरान वहाँ के शासक ने उन्हें वहाँ से जाने को कहा क्योंकि उसे फकीर के कार्यों से आपत्ति थी। लेकिन फकीर ने इन्कार कर दिया। उसने बिच्छुओं से फकीर को डराने की कोशिश की लेकिन आश्चर्य वे उन बिच्छुओं के साथ ही रहने लगे! उनकी आध्यात्मिक शक्ति की वजह से बिच्छू फकीर को नहीं काटते थे। उस दिन से ऐसा विश्वास है कि इस स्थान पर आने वाले किसी भी व्यक्ति को बिच्छू नहीं काटते।

Birthday जन्मदिन জন্মদিন Bengali जन्मदिन

धरती पर स्वर्ग

सन् ४५४ ईसवी, राज महल, पाटलिपुत्र शहर गुप्त साम्राज्य।

एक अधीरतापूर्ण आवाज़ गूँजी, ''आखिरी बार मैं आप से पूछ रहा हूँ- क्या आप मुझे युवराज बनाएँगे?''

''निश्चित रूप से, तुम्हें मालूम होना चाहिए, पुरु, कि यह समय और स्थान उत्तराधिकार का निर्णय लेने के लिए उचित नहीं है...'' सम्राट का स्वर मंद होते हुए शांत हो गया और उसने बेचारगी से गुप्त सेना के सेनापति की ओर देखा।

''महाराज एकदम सही हैं,'' विदेश मंत्री एक नज़र खंभे के साथ खड़े एक नौजवान पर डालते हुए बीच में बोला। ''यह सर्वविदित है कि पुष्यमित्र हमलावरों-''

''क्योंकि आपका सबसे बड़ा पुत्र है, निश्चित रूप से मेरे उत्तराधिकार का प्रश्न ही नहीं है?'' पुरु ने सम्राट को घूरते हुए बीच में काटा।

बूढ़ा आदमी उठा। ''दयापूर्वक मेरे साथ राजभवन चलिए - मेरे लोग मेरा फैसला सुन लें यही अच्छा है।''

पुरु का चेहरा विकृत दिखाई दिया; बाकी लोग झुक गए। बाहर विशाल राज भवन में बहुत से लोगों के बैठने का स्थान था। सम्राट कुमार गुप्त अपनी कमज़ोरियों को न दर्शाते हुए सावधानी से अपने राजसिंहासन की ओर धीमे कदमों से चढ़े। जब वे अपने लोगों की ओर मुख करके खड़े हुए, वे एक बार फिर एक राजा थे, जिसने सभी पीढ़ियों के लोगों का समृद्धि पथ पर नेतृत्व किया था।

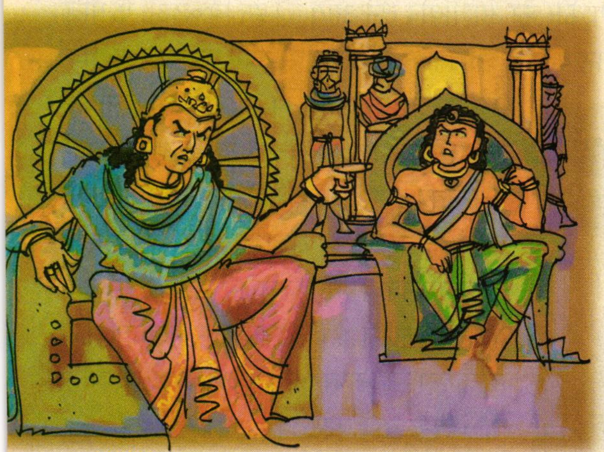

''मेरे समर्पित प्रजाजनो,'' उन्होंने शुरू किया। ''जब मेरे दादाजी के पिता, चन्द्रगुप्त प्रथम ने दो राज्यों को सम्मिलित किया, तब उनका शासित राज्य छोटा था। और फिर भी वे महान बनने के विचार से पीछा छुड़ाने में असफल रहे - और मेरे पूर्वजों ने राज्य की सीमाएँ बढ़ाईं। हम विद्रोहियों के समक्ष एक शक्ति बन गए: हमने चीनियों के साथ व्यापार किया, पर्शियों के साथ संधियाँ कीं तथा भारतवर्ष के रक्षक बन कर खड़े हुए।''

Birthday जन्मदिन वाढदिवस Marathi वाढदिवस

सहमति के एक उद्घोष ने उन्हें बीच में अवरोधित किया। उन्होंने ज़ारी रखते हुए कहा, ''लेकिन बाद में हम विद्रोहियों द्वारा त्रस्त किए गए, जो हमारी सफलताओं से ईर्ष्यादग्ध थे जिन्होंने हमारी भूमियाँ बरबाद कीं, हमारे आदमियों को मारा और शहरों व कस्बों में लूट-खसोट की। हमारा अधिकतर भाग्य उन्हें खत्म करने में बीता; फिर भी उनका आना जारी है। तुम्हारा शासक होने के नाते मैं ईमानदार होने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हूँ; हम उनका ज्वार रोक पाने में असमर्थ हैं। समृद्ध पाटलिपुत्र पर आक्रमण की अफवाहें भी फैली हैं। हमें एक चमत्कार की आवश्यकता है।''

एक भयानक सन्नाटा पसर गया।

''गुप्त सम्राटों में उत्तराधिकारी का चयन सदियों से चली आ रही परंपरा है जो ठीक प्रकार से राज्य को चला सके, उच्च शिक्षा प्राप्त, समझदार तथा नेतृत्व के योग्य हो। इसलिए मैं युवराज...''

घबराहट ने सभा को जकड़ लिया। पुरु ने अपनी साँस रोक ली।

''....स्कंद गुप्त को चुनता हूँ!''

लंबा नौजवान, जो पूर्वी कक्ष में शान्त था, आश्चर्य से भर उठा।

''मैं विरोध करता हूँ।'' एक तीखी आवाज़ आई। पुरु गुप्त खड़ा हुआ, यह सम्राट के गहन संताप के लिए काफी था।

''मेरा विश्वास है- ऐसा ही मेरे मंत्रियों का भी है - कि स्कंद शासन के लिए पूर्ण रूप से योग्य है,'' सम्राट ने कहा।

''बिना किसी अभियान में स्वयं को साबित

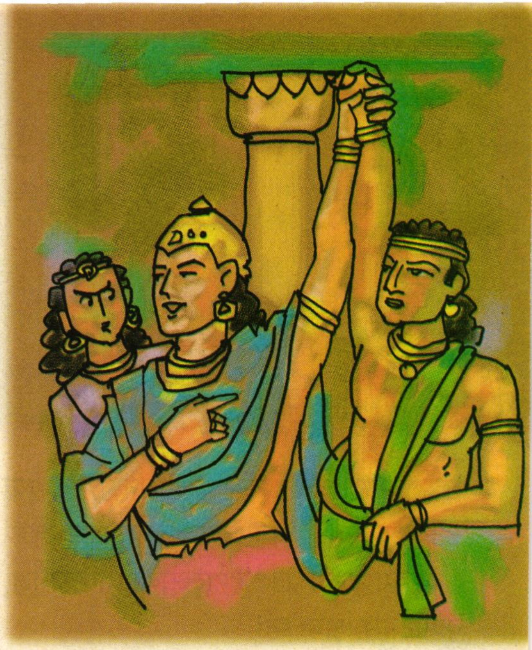

किए? आप अपने लोगों से एक अनुभवहीन नौजवान को राजा स्वीकार करने की उम्मीद नहीं कर सकते!'' पुरु लोगों की तरफ घूमा। ''मेरी बात सुनिए : मैं तार्किक तौर पर एक योग्य व्यक्ति हूँ तथा मैं एक अनुबंध का प्रस्ताव रखता हूँ।''

सभी प्रतीक्षा करने लगे।

''स्कंद गुप्त मेरी शुभेच्छा के साथ राजा बन सकता है- अगर वह पुष्यमित्र जनजातियों को हरा देता है। अगर वह असफल हो जाएगा, उसे साम्राज्य से निर्वासित होना पड़ेगा!''

एक चिंतामग्न फुसफुसाहट शुरू हुई व तेज़ होती हुई छत तक पहुँच गई। पुरु विजयोल्लासित मुस्कान से मुस्कुराया।

सम्राट झुका। ''अगर यह उसकी परीक्षा है तो उसे इसमें ज़रूर उत्तीर्ण होना चाहिए,'' वह बुदबुदाया।

सेनापति तेज़ी से स्कंद गुप्त के पास आया,

तकरीबन खींचते हुए उसे सिंहासन तक ले गया और चिल्लाया। ''युवराज स्कंद गुप्त अमर रहें!''

सभा फूट पड़ी। ''हमारे लोकप्रिय महाराज, कुमार गुप्त, अमर रहें!''

* * *

सन् ४५५ ईसवी, गिरनार पहाड़ियों की तलहटी, काठियावाड़।

रात का आसमान चमकते तारों के कालीन के साथ चमक रहा था। दूरी पर आधी रात की नीली छाया क्षितिज पर पहाड़ियों की आकृतियाँ दिखा रही थी।

''मैं अभी तक नहीं जान पाया हूँ कि हम यहाँ क्यों हैं?'' सौराष्ट्र शहर का राज्यपाल चक्रपालित ध्यान मग्न हो गया। स्कंद गुप्त के अभियान की बात उस तक पहुँच चुकी थी तथा उसके बचपन का मित्र होने के नाते वह उसकी सहायता करने को तत्पर था।

''मैं चकित हूँ। आखिरकार यह तुम्हारा राज्य है। अपनी बुद्धि प्रयोग में लाओ,'' उसके सहयोगी ने समझाया।

स्कंदगुप्त तथा चक्रपालित एक सिंचाई नहर के किनारे मिट्टी की सतह पर बैठे थे। उनके चारों तरफ गेहूँ के खेत ही खेत थे।

चक्रपालित अत्यंत खिन्न था। भविष्य उजाड़ दिखाई दे रहा था। ''हम महीनों से पुष्यमित्र के साथ चूहे बिल्ली का खेल खेल रहे हैं - और जो सब हमने पाया है वह एक मिट्टी की गद्दी है। ऊपर से तुमने वीरसेन के संरक्षण में हमारे पाँच योद्धा घर भेज दिये!''

''वीरसेन घायल था,'' स्कंद ने बताया। ''लेकिन हमने अपने शत्रुओं को थका दिया था। उनकी संख्या लगातार कम हो चुकी थी। तुम्हारा धन्यवाद, कम से कम इन समझौतों से हमें सुदर्शन झील का पानी तथा भोजन तो प्राप्त हुआ।'' स्कंद ने गिरनार पहाड़ियों की ओर इशारा किया जहाँ चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में एक अद्‌भुत झील की खुदाई की गई थी।

''हम एक अवसरोचित भेंट के लिए जाल बिछाते हुए पूरे राज्य भर में भागते फिर रहे थे- और पाटलिपुत्र हमें ताज़ा सेनाएँ ही नहीं भेज रहा था।

''मुझे जीतने न देने के लिए पुरु के अपने कारण हैं,'' स्कंद ने कहा।

''उसे कौन दोष दे सकता है? शायद हमें पुष्यमित्र के आदमियों की अधिक चिंता करनी चाहिए जिन्होंने वन्य क्षेत्र के पार अपने तंबू लगा लिए हैं।''

चक्रपालित धीमे से उठा। चारों तरफ उनकी अपनी थोड़ी बची सेना की टुकड़ी भी उठ गई।

Birthday जन्मदिन ଜନ୍ମଦିନ Oriya जन्मदिन

हार बड़ी भयानक दिख रही थी- उनके शत्रु हज़ारों की तादाद में थे; वे मात्र कुछ सौ ही थे।

''युद्ध के लिए तैयार हो जाओ-'' चक्रपालित शुरू हुआ।

''रुको,'' स्कंद गुप्त अचानक बोला। ''पहले जितना संभव हो सके उन्हें हमारे पास तक आने दो।'' उसकी सोच के अनुसार शांत भूक्षेत्र गिरनार पहाड़ियों के मध्य सुरक्षित रहेगा। वे हथियारों की खनक, चिल्लाने की आवाज़ें तथा गालियाँ सुन सकते थे।

''अब प्रतीक्षा किसलिए?'' चक्रपालित ने जोर से चिल्लाया।

स्कंद ने पहाड़ियों की ओर इशारा किया, ''वह'' अँधेरे में एक रोशनी चमकी।

एक अचानक शांति। और फिर - एक भयानक शोर। धरती हिलने लगी; चिड़ियाँ चिल्लाने लगीं जानवर तितर-बितर हो गए। यह ऐसा थाकि उनके ऊपर समुद्र फट पड़ा था; धरती समाने को थी।

''यह क्या है?'' चक्रपालित ने आँखें चौड़ी करते हुए पूछा। पुष्यमित्र कबीलाई तकरीबन हमला करने को थे। मशालों की रोशनी में उनके हथियार चमक रहे थे।

''चमत्कार जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे थे। जल्दी करो!'' स्कंद ने चक्रपालित व अपने आदमियों को इकट्ठा किया झील के किनारे से ऊपर चढ़ने लगे। ''हमें ऊँची ज़मीन पर जाना है!''

कुछ क्षणों बाद वे मैदानों में ऊँचाई पर खड़े वृक्षों पर थे, पानी की एक बड़ी दीवार मैदानों में फँसे कबीलाइयों से जा टकराई।

उनके हथियार पानी की शक्ति के आगे कुछ नहीं थे; कुछ मिनटों में वे धराशायी हो गए।

''हे भगवान'', चक्रपालित ने सामूहिक नरसंहार को देख कर साँस ली। ''कैसे- कौन?''

''वीरसेन और उसके साथी वापस घर नहीं गए थे,'' स्कंद मुस्कुराया।

''मैंने उन्हें झील के बाँध तोड़कर इशारा करने के लिए कहा था। मैं जानता था कि अगर हम उन्हें अपने पास आने के लिए लालायित करेंगे तो वे पानी की बाढ़ में बहा दिए जाएँगे।'' उसने आँख मारी। ''यद्यपि, नुकसान के लिए माफी चाहता हूँ।''

''यह तो कुछ भी नहीं है मुझे इसे दोबारा बनवाने में और अधिक प्रसन्नता होगी।'' चक्र-पालित ने उत्तर दिया। वह झुककर बोला, ''तुम्हें क्या कहूँ, सम्राट स्कंद गुप्त या भारतवर्ष का रक्षक!''

- पवित्रा श्रीनिवासन

Birthday जन्मदिन જન્મદિવસ Gujarati जन्मदिवस

चूँ चूँ का डिब्बा

नीचे दी गई सूची देखिए और अपनी भाषा में उन्हें पढ़िए। तत्पश्चात् नीचे सूची देखिए और सीखिए उन्हें अन्य भाषाओं में कैसे कहते हैं और कैसे लिखते हैं।

English	Cycle	Sun	Teacher	Birthday	Doctor
Hindi	साइकिल	सूरज	अध्यापक	जन्मदिन	चिकित्सक
Telugu	సైకిలు सैकिलु	సూర్యుడు सूर्युड्डु	ఉపాధ్యాయుడు उपाध्यायुड्डु	పుట్టినరోజు पुट्टिनरोजु	వైద్యుడు वैद्युड्डु
Tamil	மிதிவண்டி मिदिवण्डि	சூரியன் सूरियन	ஆசிரியர் आसिरियर	பிறந்தநாள் पिरन्दनाल	மருத்துவர் मरुत्तुवर
Bengali	সাইকেল साइकेल	সূর্য सूर्ज्य	শিক্ষক शिक्षक	জন্মদিন जन्मदिन	চিকিৎসক चिकित्सक
Marathi	सायकल सायकल	सूर्य सूर्य	शिक्षक शिक्षक	वाढदिवस वाढदिवस	वैद्य वैद्य
Kannada	ಸೈಕಲ್ಲು सैकल्लु	ಸೂರ್ಯ सूर्य	ಉಪಾಧ್ಯಾಯ उपाध्याय	ಹುಟ್ಟಿದದಿನ हुट्टिददिन	ವೈದ್ಯ वैद्य
Oriya	ସାଇକେଲ सायकेल	ସୂର୍ଯ୍ୟ सूर्ज्य	ଶିକ୍ଷକ सिख्यक	ଜନ୍ମଦିନ जन्मदिन	ଡାକ୍ତର डाक्तर
Gujarati	સાયકલ सायकल	સૂર્ય सूर्य	શિક્ષક शिक्षक	જન્મદિવસ जन्मदिवस	ડૉક્ટર डोक्टर
Assamese	চাইকেল चाइकेल	সূৰ্য हूर्ज्य	শিক্ষক हिख्खक	জন্মদিন जन्मदिन	ডাক্তৰ डाक्तर
Malayalam	സൈക്കിൾ सैकिल	സൂര്യൻ सूर्यन	അധ്യാപകൻ अध्यापकन	ജന്മദിനം जन्मदिनम	ഡോക്ടർ डोक्टर
Santali	ᱰᱩᱞᱩᱝ डुलुं	ᱥᱤᱧ ᱪᱟᱸᱫᱚ शिञ चान्दो	ᱢᱟᱪᱮᱛ माचेत	ᱡᱟᱱᱟᱢ ᱢᱟᱦᱟ जानाम माहा	ᱰᱟᱠᱴᱚᱨ डाक्तोर
Sanskrit	द्विचक्रिका द्विचक्रिका	सूर्यः सूर्यः	शिक्षकः शिक्षकः	जन्मदिनम् जन्मदिनम	वैद्यः वैद्यः

तिरछे लिखे शब्दों को ऊपर दी गई तालिका में ढूँढ़िए। उनका अर्थ देखिए और रिक्त स्थान भरिए!

१. मैं एक *डुलुं* या .... लेकर विद्यालय जाता हूँ।

२. *हूर्ज्य* .... का केन्द्र है।

Birthday	जन्मदिन	জন্মদিন	Assamese	जन्मदिन

English	Room	Tree	Monkey	Garden	Sea
Hindi	कमरा	पेड़	बन्दर	बगीचा	समुद्र
Telugu	గది गदि	చెట్టు चेट्टु	కోతి कोति	తోట तोट	సముద్రం समुद्रम
Tamil	அறை अरै	மரம் मरम	குரங்கு कुरङ्गु	தோட்டம் तोट्टम	கடல் कडल
Bengali	ঘর घर	গাছ गाछ	বান্দর बान्दर	বাগান बागान	সমুদ্র समुद्र
Marathi	खोली खोली	झाडे झाडे	माकड माकड	बाग बाग	समुद्र समुद्र
Kannada	ಕೋಣೆ कोणे	ಮರ मर	ಕೋತಿ कोति	ಉದ್ಯಾನ उद्यान	ಸಮುದ್ರ समुद्र
Oriya	କୋଠରି कोठरि	ଗଛ गछ	ମାଙ୍କଡ माङ्कड	ବଗିଚା बगिचा	ସମୁଦ୍ର समुद्र
Gujarati	ઓરડો ओरडो	વૃક્ષ वृक्ष	વાંદરા वांदरा	બગીચો बगीचो	દરિયો दरियो
Assamese	কোঠা कोठा	গছ गछ	বান্দৰ बुन्दर	বাগিচা बुगिचा	সাগৰ सागर
Malayalam	മുറി मुरि	വൃക്ഷ वृक्ष	കുരങ്ങു कुरङ्गु	പൂന്തോട്ടം पून्तोट्टम	കടൽ कडल
Santali	ᱠᱩᱴᱷᱤ कुठि	ᱫᱟᱨᱮ ᱠᱳ दारेको	ᱜᱟᱬᱤ गाणी	ᱵᱟᱜᱟᱱ बागान	ᱫᱚᱨᱮᱭᱟ दोरेया
Sanskrit	प्रकोष्ठः प्रकोष्ठः	वृक्षः वृक्षः	वानरः वानरः	उद्यानम् उद्यानम्	सागरः सागरः

३. मेरे पसंदीदा ***अध्यापकन*** .... हैं।

४. मेरा ***वाढदिवस*** .... को है।

५. मेरे पारिवारिक ***वैद्यः*** .... हैं।

६. मैं अपना ***गदि*** .... के साथ साझा करता हूँ।

७. हर जन्मदिन पर एक ***मर*** रोपो और .... कम करो।

८. .... ***वांदरा*** भगवान के नाम से भी जाने जाते हैं।

९. मेरे **तोट्टम** में .... फूल हैं।

१०.जब .... हो तो मछुवारों को ***समुद्र*** में नहीं जाना चाहिए।

Birthday	जन्मदिन	ജന്മദിനം	Malayalam	जन्मदिनम

पाताल दुर्ग-१७

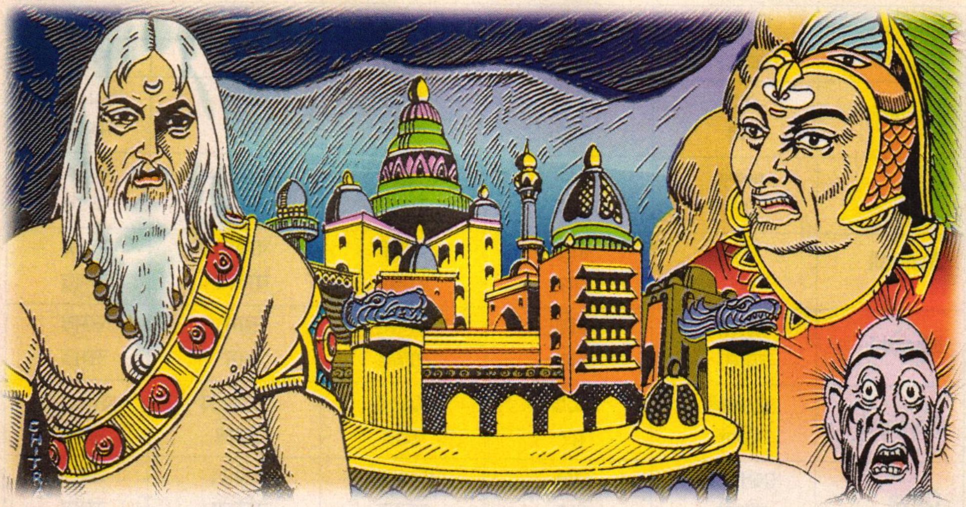

(कालशम्बर मान्त्रिक, धूमक और उसके साथियों को पहाड़ की चोटी पर ले गया। वहाँ उनको एक सरोवर के तट पर राजकुमारी कान्तिसेना दिखाई दी। कुम्भीर, जो उसकी रक्षा कर रहा था, शायद जान गया कि मान्त्रिक उस प्रदेश में आया हुआ है। वह उनके पास तेज़ी से आने लगा। इसके बाद-)

धूमक को ज्यों ही संदेह हुआ कि कुम्भीर उनकी ओर आ रहा है त्यों ही उसने तलवार निकाली और कहा, ''महामान्त्रिक, कुम्भीर को हमारा रहस्य मालूम हो गया है, वह इसी ओर आ रहा है। राक्षसों को इसकी सूचना दिए बगैर ही उसको यमलोक पहुँचा देना ठीक है।''

मान्त्रिक ने हँस कर कहा, ''धूमक जल्दबाज़ी न करो। कुम्भीर हमारी तरफ का ही है। वह हमारे लिए वैसा ही है जैसा कि विभीषण रावण के लिए था, वंश द्रोही हर किसी युग में होते हैं।''

कुम्भीर पेड़ के पास आया और एक सूखे तने पर बैठ गया। ''शम्बर! राक्षसों के बड़े कान होते हैं। उनकी श्रवण शक्ति बड़ी होती है। कुछ दिनों से मुझे यह संदेह हो रहा है कि तुम कहीं विश्वासघात तो न करोगे। मैं महाकलि का भाई नहीं हूँ, इसलिए मैं विभीषण कैसे हो सकता हूँ? और रही वंश की बात? तो सुनिए हमारा राहु वंश है और उसका केतु। इसलिए वंश द्रोह की तो बात ही नहीं उठती।''

मान्त्रिक ने उसकी ओर दो कदम बढ़ाए तथा तने के पास खड़े होकर धीमे से कहा, ''कुछ नए लोग आए हैं ताकि तुम पर उनको विश्वास हो

Birthday जन्मदिन ᱡᱟᱱᱟᱢ ᱢᱟᱦᱟ Santali जानाम माहा

सके, इसलिए मैं छोटे मोटे झूठ बोल रहा हूँ। तुम व्यर्थ संदेह मत करो। वे तुम्हें जानते हैं। कदम्ब राज्य की गुफ़ाओं में जो तुमने राजकुमारी को वचन दिया था, वे यह भी जानते हैं।''

यह सुनते ही कुम्भीर ने अपना सिर मोड़ा और धूमक व सोमक की ओर देख कर कहा, ''ये जीते जी इतनी दूर आए हैं? यह काला गरुड़ पक्षी किस का है? यह मुख मैंने कहीं देखा है।''

''देखा ही होगा, यह जंगलवासियों का सरदार विरूप है।'' कालशम्बर मान्त्रिक ने कहा। विरूप, धूमक और सोमक ने झुक कर राक्षस को नमस्कार किया।

''क्या यह विनय है?'' कुम्भीर ने आँखें मिचकाईं। ''शम्बर! मैंने अपने वंश के गौरव संरक्षण के लिए तुम्हारी सहायता करने का वादा किया था। कहीं तुम विश्वासघात तो नहीं करोगे?''

''यह संदेह तुम्हें क्यों हो रहा है?'' मान्त्रिक ने पूछा। ''मैं हज़ार आँखों से सब कुछ देखता आ रहा हूँ। पर्वत के नीचे जल प्रपात में, पहाड़ के सरोवर में, जो तेरे साथी खिलवाड़ कर रहे हैं, उन सब के बारे में जानता हूँ। वे क्या कर रहे हैं?''

''सब बातें एक साथ जान लेना ठीक नहीं। पर यह मेरा वादा है तुमसे कि तुम पर और तुम्हारे वंश के तीस राक्षसों पर मैं कोई आपत्ति नहीं आने दूँगा।'' मान्त्रिक ने कहा।

कुम्भीर कुछ न बोला। पर वह असंतुष्ट दिखाई दिया। फिर वह तने के पास से सरोवर के तट के पास चला गया।

मान्त्रिक ने तने का छेद बन्द कर दिया। सिर नीचे करके वह कुछ दूरी तक वह इस तरह चला, जैसे बड़ी चिन्ता में हो। ''भद्र! क्या सब तैयारियाँ ठीक तरह से हो रही हैं न? दो घंटों में अँधेरा हो जाएगा। भस्मों को अपनी जगह रख देना। राक्षसों के कृषि जन्तुओं यानि चीते शेर हाथियों को औषधि खिलाने में कोई चूक नहीं होनी चाहिए। हर प्रहर के अंतराल पर औषधि उन तक पहुँचनी चाहिए। चार खूशक उनके शरीरों में पहुँचते ही वे अपने हिंस्त्रक रूप में आने लगेंगे। याद रखो हमारी सब कड़ियाँ एक दूसरे से जुड़ी हैं। कुम्भीर का कार्य तुम पर निर्भर करता है। मेरे कार्य की सफलता तुम दोनों पर आश्रित है। मेरा शक्तिशाली हमला भी जंगली जानवरों के बिना साधारण

Birthday जन्मदिन जन्मदिनम् Sanskrit जन्मदिनम

साबित होगा। अतः हमें हर कदम फूँक-फूँक कर रखना है। अब बताओ, क्या कुम्भीर के आदमी उनको कल दोपहर तक रोक कर फिर उनको शिकार के लिए छोड़ सकेंगे?''

''सब ठीक हो रहा है, आप बिलकुल चिन्ता न करें। हर कोई अपनी अपनी जगह तैयार व होशियार है। औषधि और भस्म आज रात को पाताल दुर्ग के आस-पास के पेड़ों पर चढ़ाई जा रही है तथा शेर और हाथी जो पालतू हो गए थे वे अब फिर से क्रूर व हिंसक होने जा रहे हैं। आप केवल सरोवर की बात का ख्याल रखिए। वह बड़ा पत्थर, किस जगह है यह हम नहीं जान सके। हम में जल स्तम्भन विद्या जाननेवाला कोई नहीं है न।'' भद्र ने कहा।

''इस पत्थर के बारे में फिक्र न करो यह मैं पहले ही कह चुका हूँ। यदि उसके बारे में थोड़ी सी भी गलती हुई, तो राक्षसों की मौत झूट समझो और हमारी मौत साकार। ज़रा अँधेरा होने दो, उसके बारे में जो कुछ करना है मैं कर दूँगा।'' मान्त्रिक ने कहा।

इसके बाद पर्वत के ''गर्भ'' में वे अपने-अपने निवास की ओर चल दिए। वे सुरंग की सीढ़ियों पर से उतर रहे थे कि कुछ लोग सामने से भागे-भागे आए। ''मान्त्रिक सुरंग की दीवारों से कहीं-कहीं पानी आ रहा है। कहीं हमारे निवास स्थान डूब तो नहीं जाएँगे?''

मान्त्रिक कुछ देर तक स्तब्ध खड़ा रहा फिर झट से जल्दी-जल्दी सीढ़ियों से उतर कर सुरंग में बने निवास में गया। वहाँ उसे दीवारों पर पानी की धाराएँ दिखाई दीं। मान्त्रिक ने एक छोटा पात्र मँगवाया उसमें उस पानी को लिया और अपने अनुचरों में से एक को उसे पीने के लिए कहा।

''स्वाद कैसा है? खारा है या मीठा है?'' मान्त्रिक ने पूछा।

''मीठा है...'' उसने कहा।

''मीठा...? मतलब जैसा कि हमारे जल प्रपात का है?'' मान्त्रिक ने पूछा। अनुचर ने सिर हिला कर कहा, ''हाँ''

''हमें किसी प्रकार का भय नहीं है। पर देखते रहो कि पानी ज़्यादा न आने लगे।'' फिर भद्र की ओर मुड़ कर मान्त्रिक ने कहा, ''भद्र, वे रस्सियाँ

Doctor | चिकित्सक | వైద్యుడు | Telugu | वैद्युडु

तैयार हैं न? मैं थोड़ी देर में सरोवर के पास जा रहा हूँ। मैं अपने साथ धूमक, सोमक और विरूप को ले जाऊँगा। यहाँ की तैयारियों की जिम्मेवारी तुम पर है।''

सूर्यास्त के बाद अँधेरा होने पर कालशम्बर, धूमक, सोमक और विरूप को लेकर गुफा में से पर्वत की चोटी पर गया। वहाँ एक पेड़ के नीचे, बेलों से बनी लंबी रस्सी पड़ी थी, मान्त्रिक के कहने पर विरूप ने उसको अपने कन्धों पर डाल लिया।

उन्हें सब विचित्र-सा लग रहा था, भद्र और मान्त्रिक में जो बातचीत हुई थी, उसका एक शब्द भी वे समझ न सके थे। ये बूटियाँ, सरोवर, पत्थर, जल स्तम्भन सब उनको विचित्र-सा लग रहा था। पूछने पर कालशम्बर ने कहा, ''यह परम रहस्य है।''

आगे चलते हुए मान्त्रिक बोला, ''यह रहस्य आसानी से समझ में आने वाला नहीं। हरेक गुरू, जो यह विद्या जानता है, अपने सर्वश्रेष्ठ शिष्यों को या अपने पुत्रों को ही जल स्तम्भन विद्या सिखाता है। इसे सीखने में कम से कम पाँच वर्षों का समय लगता है। इस विद्या को सीखने में सबसे बड़ी मुश्किल है-आत्म विस्मरण तथा दूसरी बड़ी दिक्कत है - स्थान विलोपन। मैं यह विद्या सीखने के दस वर्षों के बाद भी स्थान विलोपन की मुश्किल से उबर नहीं पाया हूँ अतः मुझे रस्सी का सहारा लेना पड़ता है।''

आकाश में तारे झिलमिलाने लगे थे। उनके प्रकाश में धीमे-धीमे चलते हुए वे चुपचाप पहाड़

के सरोवर के पास पहुँचे। वे जिस जगह पहुँचे थे, वहीं कुम्भीर राक्षस और राजकुमारी कान्ति-सेना कुछ देर पहले ही टहल कर गए थे। यह प्रदेश पाताल दुर्ग के पास था।

तट पर पहुँचते ही कालशम्बर मान्त्रिक ने पानी में मन्त्रदण्ड को आधा डुबोया। कुछ मन्त्र पढ़ते-पढ़ते उसने चारों देखा। तट पर बहुत-से वृक्ष थे। उनकी टहनियाँ, हवा के झोंके के साथ एक दूसरे से टकराते हुए अजीब सी ध्वनि कर रही थीं।

मान्त्रिक ने मन्त्रदण्ड उठा कर उनकी ओर इशारा करके धूमक और सोमक को दिखाते हुए कहा, ''बेल का एक सिरा उस पेड़ पर बाँध दो और दूसरा मेरे हाथ में दे दो। मैं सरोवर में घुसने जा रहा हूँ। कब वापस आऊँगा, कह नहीं सकता। पर तुम चुपचाप

Doctor चिकित्सक மருத்துவா் Tamil मरुत्तुवर

यहीं बैठे रहो।'' कहकर उसने बेल का एक सिरा हाथ में लिया और ''शाम्भवी'' कहते हुए पानी में कूद गया।

धूमक, सोमक और विरूप चुपचाप बैठे रहे। बैठे-बैठे एक घंटा हो गया। पेड़ों के झुरमुट में एक उल्लू ज़ोर से चिल्लाया। विरूप के कंधे पर जो गरुड़ तब तक चुपचाप बैठा था, उल्लू का चिल्लाना सुनकर पंख फड़फड़ाता चिल्लाया। इतने में एक चमगादड़ ने उसके सिर पर चोट की और पेड़ों में जा छिपा। गरुड़ चिढ़ गया। विरूप के कन्धे पर से उतर कर उसने पैरों से ज़मीन को खरोंचा और फिर उड़ने की कोशिश की।

धूमक ने आगे बढ़ कर उसके पैरों में लटकती रस्सी पकड़ ली। ''विरूप, इसको उड़ने न दो, क्योंकि यह हमारे काम आ सकता है।'' ''इसे भागने न दूँ? यह मुझे छोड़ कर कहाँ जाएगा?'' कहकर विरूप ने गरुड़ पक्षी को दोनों हाथों से पकड़ लिया। ''बहुत देर हो गई है। मान्त्रिक, अभी तक पानी से नहीं निकले हैं।'' उसने कहा।

''यही मैं देख रहा हूँ। भले ही कोई जल स्तम्भन विद्या जान जाए, पर पानी में कोई इतनी देर नहीं रह सकता। अगर उस पर कोई खतरा आया, तो हम सब राक्षसों के हाथों मारे जाएँगे।'' धूमक ने हताश होकर कहा।

वे इस तरह की बातें कर ही रहे थे कि पहाड़ के नीचे पाताल दुर्ग के पास उनको बाघों का शोर और राक्षसों के पटाखों की रोशनी दिखाई दी।

''लगता है उन्होंने जलसा अभी से शुरू कर दिया है।'' विरूप ने कहा।

''ऐसा ही लगता है कल दोपहर को ही तो वे शशिकान्त का शिरच्छेद करेंगे, उसे और राजकुमारी कान्तिसेना को मान्त्रिक कैसे इन दुष्टों के चुँगल से छुड़ा सकेगा, यह मुझे मालूम नहीं पड़ रहा है। हम जिस पहाड़ के ''पेट'' में हैं, वहाँ की सुरंगों का रास्ता जान कर ही वे हमें पहले मार सकते हैं।'' सोमक ने कहा।

''पता नहीं यह मान्त्रिक हमें हमारे कार्य क्यों नहीं समझा रहा है। धूमक बाबू, ऐसा लग रहा है कि हम यहाँ मात्र दर्शक बन कर आए हैं।'' विरूप ने परेशान होते हुए कहा।

''धैर्य रखो। मुझे लगता है कि मान्त्रिक ने हमें यह सब यूँ ही नहीं दिखाया है। उसकी हर कड़ी

Doctor चिकित्सक চিকিৎসক Bengali चिकित्सक

अपने चन्दामामा का मूल्यांकन करो

आपको कौनसा फीचर सर्वाधिक ज्ञानवर्धक लगता है?

a. समाचार झलक b. उदीयमान सितारा c. भारत दर्शक

आप अपना उत्तर RYC <a/b/c> लिखकर 54646 पर SMS कर दो।

अक्तूबर २००९ का परिणाम: a: 85%; b: 15%

योजनाबद्ध दिख रही है। वह हमें भी किसी विशेष प्रयोजन से सब बता रहा है। यहाँ तक कि उसने महाकलि की सैन्य शक्ति में भी अपनी सेंध लगा रखी है। वरना हम तो कुम्भीर को अपना दुश्मन ही माने हुए थे। पर अभी स्थिति थोड़ी विकट है क्योंकि जल स्तम्भन हमारी समझ और बल से एकदम परे है और...'' धूमक विचारों में डूब गया।

''कुछ भी हो सकता है, अगर अभी मान्त्रिक का शव पानी के ऊपर तैर आए तो भी मुझे आश्चर्य न होगा।'' धूमक ने अपनी बात पूरी करते हुए कहा।

वह अभी अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि सरोवर में छोटी-छोटी लहरें उठीं। फिर मान्त्रिक आता दिखाई दिया। उसने एक हाथ में मन्त्रदण्ड था और दूसरे में सोने का चमचमाता छोटा मगर का बच्चा था। वह किनारे की ओर तैरता आ रहा था, धूमक और उसके साथी खुशी-खुशी उसकी ओर भागे। मान्त्रिक ने मुस्कुराते हुए मगर के बच्चे को दिखाकर कहा, ''यह बड़ा शुभ सूचक है। कहीं भी तुमने सोनें का मगर नहीं देखा होगा। इसे और काले गरुड़ का उपयोग करके कल मैं एक महान कार्य करने जा रहा हूँ।''

धूमक और उसके साथी सोने के मगर के बच्चे को देख कर आश्चर्य कर रहे थे। मान्त्रिक ने पहाड़ के पास होते शोर को थोड़ी देर सुना। ''ओहो, तो महाकलि राक्षस के पिता की वर्षगाँठ का समय पास आ गया है। जय शाम्भवी!'' कहकर उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए। ''इन बेलों को पेड़ों के तनों पर ज़ोर से तो बाँध दिया है न? क्योंकि महाकलि और कालशम्बर के बीच भयंकर युद्ध प्रारंभ हो गया है।''

(और है)

Doctor	चिकित्सक	वैद्य	Marathi	वैद्य

अनुनिर्वा

कृतज्ञ

(मयूरी-एक, विलुप्तों की भूमि अनुनिर्वा पर जिसका कथन ही कानून है, वहाँ आनेवाले पहले मानव शिवा, के साथ खिलवाड़ कर रही है। वह उसे युद्ध की सभा, खून के प्यासे प्राणियों का एक समूह, में ले जाती है जो कि किसी भी प्रकार से मानव जाति को उसके गुनाहों के लिए क्षमा करने के पक्ष में नहीं है।)

मैंने उसकी ओर देखा। ''क्या तुम मेरी कहानी जानते हो लड़के?'' मयूरी ने धीमी लेकिन भयानक आवाज़ में पूछा। शब्द हवा में एक चीते की तरह लपके। उसने मेरे उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की। ''तुम्हारी ही तरह, मैंने भी धरती पर जन्म लिया। कैसा अजूबा है यह! एक कली, एक शावक व एक अंडे को एक साथ तैयार करने का षडयंत्र रचाने वाला संसार। तुम्हारे हृदय में ज़िंदगी की धड़कन, कितनी नयी और वास्तव में अद्भुत! साँस लेना, सभी जातियों की अखण्डता हेतु पूजा करना! मैं भी मानव गर्भ में एक नया जीवन धारण किए सोई थी मैं जन्म लेने ही वाली थी...'' मयूरी रुकी। बाकी प्राणी शान्त थे। मैमथ की आँखों में आँसू चमकने लगे।

''मैं सोई थी क्योंकि मैंने खतरे की कल्पना तक नहीं की थी। मैं धरती का एक हिस्सा थी, थी कि नहीं? मैं धरती पर आ चुकी थी क्योंकि कोई यह चाहता था, आई कि नहीं? अपने वजूद को निर्दोषता में लपेटे मैं संसार द्वारा वापस अपनाए जाने की प्रतीक्षा करती रही कि वे मुझे सब बुराइयों से बचाएँगे,'' उसने कहा। मैं नहीं जानता था कि वह यह सब मुझे क्यों बता रही थी। लेकिन मैं सुनता रहा क्योंकि उसका दर्द मुझे एक जलती हुई मशाल की तरह सुलगता हुआ लगा। बिना पाप किए मैं अपराधी था और फिर भी मैंने महसूस किया कि मैं इसी लायक हूँ।

''ये ज़िंदगी की आकृतियाँ है!'' उसके गुस्से

Doctor	चिकित्सक	ವೈದ್ಯ	Kannada	वैद्य

की गवाह बनी खड़ी भीमकाय छाया की ओर अपने हाथों को फैलाते हुए वह गरजी।

"कुछ यहाँ इसलिए आए क्योंकि उनका जीवन चक्र समाप्त हो चुका था। धरती बदल रही थी, नयी जिंदगी की जड़ें जमने का समय था। उन्हें जाना पड़ा क्योंकि ब्रह्माण्ड अनन्त है पर इसके बच्चे नहीं। हम यह स्वीकार कर सकते हैं। हम समझ सकते हैं टिमटिमाती ज़िंदगी क्षणभर की है फिर चाहे वह कितनी ही शानदार क्यों न हो। हम जानते हैं कि नवीन सृजन हेतु पुरातन को नष्ट होना ही चाहिए। यही नियम हैं जिनसे हम ईश्वर को थामे हुए हैं। वे नियम जिनके लिए हम वर्तमान में अपने जीवन का बलिदान करने को उत्सुक हैं। लेकिन इसी वजह से हम यहाँ नहीं आए... बहुत से यहाँ अपनी अनुपस्थिति प्रतिस्थापन हेतु बिना जीवन के यहाँ आए हैं। यह भाग्य नहीं था जो उन्हें यहाँ लाया। यह हर उस व्यक्ति की एक निर्दयतापूर्ण दौड़ की सनक थी जो स्वयं को दूसरे जीवधारियों के संबंध में कहीं अधिक महान समझता है!"

"मयूरी!" वार्बलर कोमलता से बोली। पूरी तरह एक मधुर आवाज़। "मानव को उसके गुनाहों का विश्वास दिलाने हेतु क्या तुम्हें दुबारा उन भयावह स्थितियों में जीना चाहिए?" मगरमच्छ ने पूछा। "तुम्हें जरूरत नहीं है," मैं बिना सोचे-विचारे बोल उठा। "मैं अनुनिर्वा में

नया हूँ, लेकिन तुम्हारी तरफ के लोगों के गुस्से ने पहले ही मुझे शर्मिंदा कर दिया है। मेरे पास अपनी सफाई में कहने को कुछ भी नहीं है। मैं केवल यही कह सकता हूँ कि जो तुम महसूस करते हो वह नाराज़गी मानवीय दुखों के लिए विदेशी तत्व नहीं है। हममें से भी बहुतों ने पशु साम्राज्य के विनाश का विरोध किया है।"

"पशु साम्राज्य! हा!" मैमथ ने फुफकारते हुए कहा। "देखो कैसे उसने हम सभी को एक साथ बाँध दिया।"

"पशु साम्राज्य!" मगरमच्छ दहाड़ा। "और इस मुहावरे से तुमने स्वयं को इससे अलग निकाल लिया है, क्या ऐसा नहीं किया तुमने? तुम सोचते हो कि तुम हम सबसे बेहतर हो।"

"देखो..." मैंने निराशापूर्वक शुरू किया। जो कुछ भी मैंने कहा उसने उन्हें ज़्यादा और ज़्यादा भड़काने दिया। "मैंने जानबूझकर अपराध

Doctor	चिकित्सक	ଡାକ୍ତର	Oriya	डाक्तर

नहीं किया। मैं जानता हूँ मानव जीवन कायम रखने के लिए सभी जीवधारी आवश्यक हैं...'' मैं पीछे हट गया जैसे ही वार्बलर मेरी आँखों के करीब खतरनाक तरीके से उड़ा और एक काटने वाली आवाज़ में बोला, ''हम यहाँ तुम्हारी सेवा करने नहीं आए मानव! वह वर्तमान में हमारी ज़िंदगियों का ध्येय नहीं था! मानवीय ज़िंदगी कायम रखने के लिए! यह स्तब्ध करने वाला है!''

मेरा रक्त ठंडा पड़ गया। मुझे मयूरी की सलाह माननी चाहिए थी और शांत रहना था।

मयूरी ने हँसना शुरू कर दिया। उसकी हास्य शक्ति से चाँद डर के मारे हिलता नज़र आया। पेड़ मुड़े व घूमे और मेरे कानों में हवा सीटी बजाने लगी। ''भूकंप,'' मगरमच्छ ने एक शांत में कहा। ''ओह नहीं, दोबारा नहीं! कितना उबाऊ है!'' मैमथ ने भावावेश में चिल्लाकर कहा। वे कुछ ही

देर में होनेवाले एक महाविनाश के प्रति असाधारणरूप से अनुत्तेजित दिखाई दिए। ''मुझे लगता है हमें आवरण लेना चाहिए,'' मैमथ ने आह भरी। वह उठी और भारी कदमों से जंगल की तरफ गई। मगरमच्छ ने विपरीत दिशा में बहुत तेज़ी से लंबे-लंबे कदम रखने शुरू किए। वार्बलर पहले ही कंपन में जंगल की ओर उड़ गई थी। मैं डर गया। ''अनुनिर्वा में धरती अभी भी जवान है,'' मयूरी ने कहा ''यह अक्सर उथल-पुथल करती है।''

और इसे साथ ही उसने पहाड़ों की ओर चलना शुरू किया। मुझे नहीं मालूम क्या किया जाए। मैंने उसे दोनों हाथों को आसमान में आह्वान की मुद्रा में खोले व पीछे से दूर तक ओझल होते हुए घूरा। मैं उसके पीछे भागने की हिम्मत न कर सका। अगर यह मेरा भाग्य था, तो मैं इस पर प्रश्न करने वाला कौन होता हूँ।

''क्या तुम एक निमंत्रण की प्रतीक्षा कर रहे हो? कदम बढ़ाओ।'' मयूरी ने पुकारा। मात्र घबराहट के एक अहसास के बदलने से मुझे तसल्ली मिली। मैं किसी भी हाल में उस पर विश्वास नहीं कर सकता था। ''मैं जानती हूँ कि तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं,'' हवा उसके शब्दों को मेरे कानों तक लाई।'' या मैं यह तुमसे पूछ नहीं रही हूँ। तुम्हारे पास कोई दूसरा रास्ता नहीं है और इसलिए आज्ञा का पालन करो!''

यह सच था। लेमन, ओमेन और ग्वावा दूर थे। और यद्यपि वे मित्रवत थे पर मुझे शक था कि वे मुझे अन्य अनुनिर्वावासियों से बचा पाने में

Doctor	चिकित्सक	ડોક્ટર	Gujarati	डोक्टर

कामयाब हो पाएँगे। युद्ध में संख्या के मामले में हमारी स्थिति कमज़ोर हो जाएगी। जब हम पहाड़ पर चढ़े, मयूरी कुछ नहीं बोली। उसके कदमों के नीचे धरती काँपी। हमारे चारों तरफ बड़े पत्थर व चट्टानें लुढ़कीं और भयानक रूप से नीचे गिरीं। आश्चर्यजनक रूप से हम अपनी यात्रा बिना किसी नुकसान के जारी रख पाए। मैं जानता था कि मैं केवल उसके साथ चलने की वजह से सुरक्षित हूँ। इससे पहले कि मैं पहचान पाता हमारे चारों तरफ परछाइयाँ बहुत तेज़ी से गुज़रीं।

जब हम लोग पहाड़ की चोटी पर पहुँचे, वह बोली, ''तुमने मेरे शब्दों की अवहेलना की और तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ी। सभा असहमत होने के लिए बाध्य थी। इसके लिए क्या तुम उन्हें दोष दे सकते थे। उनकी आखिरी मानव की याद एक तीर, एक बंदूक की गोली तथा जीत का एक हँसी उड़ाता दृश्य है।''

''तब तुम मुझे उनके पास क्यों लेकर गयीं?'' मैंने भ्रमित होते हुए पूछा।

''अनुनिर्वा में मैं अपने निर्णय स्वयं लेती हूँ। मैं जीवन घड़ी की आवाज़ का अध्ययन करती हूँ और निश्चय करती हूँ कि प्राणियों को मिटाने का समय कब है। मेरे समक्ष मुझे यह शक्ति एक के द्वारा दी गई है। मैं चुनी गई थी। लेकिन मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगी जो मेरे साथियों को हानि पहुँचाए। मैं जानती हूँ कि वे कितना अधिक तुम्हारी जाति के हाथों पीड़ित हुए हैं। अगर मैंने पूरे मन से तुम्हारा साथ दिया और उस प्रतिज्ञा, जो हमने तुम्हारी जाति के बारे में ली है, के बावजूद

व धरती पर प्रचलित उनके भाव के बावजूद अनुनिर्वा में तुम्हारा स्वागत किया तो मैं उनका सम्मान खो दूँगी।''

''तुम मेरी सहायता करने के लिए क्यों सहमत हुईं?''

''यह आसान नहीं था। तुम देखो मैं यहाँ सम्मानित हूँ, श्रद्धेय हूँ तथा मानी जाती हूँ। वर्तमान में, मेरे समय में, मैं छोटी थी लेकिन एक विक्षिप्त थी। मेरा जन्म ३१ दिसंबर १९८४ को भोपाल में हुआ।''

भोपाल मेरे मस्तिष्क में अपनी विज्ञान की किताब का पर्यावरण त्रासदी का पाठ कौंध गया। मानव निर्मित भयानकतम त्रासदियों में से एक। भोपाल गैस दुर्घटना-३ दिसंबर। २००० से अधिक लोग कुछ क्षणों में मर गए। उसके बाद

Doctor | चिकित्सक | ডাক্তৰ | Assamese | डाक्तर

में दुष्प्रभाव के बारे में भी कुछ दिया था।

ज़हर के परिणाम स्वरूप बच्चे असमान्य हाथ-पैरों वाले... बेढंगे अंगों वाले...पैदा हुए। यहाँ तक कि कई वर्षों तक बच्चे असमान्य तथा अनाकृत पैदा होते रहे। कंपनी, जो इस त्रासदी के लिए ज़िम्मेदार थी... मुझे नाम याद नहीं..., ने इस पूरी घटना से अपने हाथ झाड़ लिए थे।

जैसे ही मैंने याद करना शुरू किया मेरी आँखें मयूरी के चार हाथों तथा उसके नीले चेहरे पर घूम गईं। ''हाँ, देखने के लिए सबूत मौजूद है,'' उसने कहा। मैंने मुश्किल से निगला।

''तुम्हारे साथ क्या हुआ?'' मैंने झिझकते हुए पूछा। मैं बिल्कुल निश्चित नहीं था कि यह मुझे कहाँ ले जाएगा।

''मानव जिसने मुझे जन्म दिया श्वास के साथ गैस को प्रश्वासित कर लिया। वास्तव में जब नर्स ने मुझे पहली बार उसके पास लाई तो वह बेहोश हो गई,'' मयूरी कड़वाहट से मुस्कुराई। ''चार हाथों वाली नवजात बच्ची वास्तव में ईश्वर का उपहार नहीं है, है न?''

मैंने अचानक महसूस किया कि धरती हिलनी बंद हो गई है। मैं उसकी कहानी में पूरी तरह खोया हुआ था। ''लेकिन मयूरी उस दुर्घटना में तो बहुते से मानव मरे गए। उस घटना के बारे में तो क्रोध अभी भी व्याप्त है। निश्चित रूप से तुम पूरी मानव जाति के प्रति बैर नहीं रख सकतीं? तुम भी एक मानव हो!'' मैंने कहा।

''मुझे वह मत पुकारो!'' उसके शब्द एक कोड़े की मार जैसे प्रतीत हुए। ''मैं एक प्रकार की एक हूँ तुम्हें दिखता नहीं क्या? बिल्कुल एकलों की तरह जो मुझसे पहले बिना किसी अपना कहलाने वाले के साथ अनुनिर्वा में आए। हम उत्परिवर्ती कहलाते हैं! असामान्य! पागल! हममें से हरेक के विलक्षण घाव हैं, विलक्षण दर्द हैं। हमारी कहानियाँ भी एक सी नहीं हैं। हम में समुदाय की कोई भावना नहीं। और इसी लिए हम बिना डर के शासन कर सकते हैं क्योंकि हम कभी भी किसी चक्र का हिस्सा नहीं थे।

उसने मुश्किल से साँस ली। एक आँसू उसके गाल पर ढुलक पड़ा। चाँद में बूँद चमकी और वह होश में आई।

''जब मैं अनुनिर्वा में आई उस समय मैं पाँच वर्ष की थी। मेरे समक्ष खड़े एक ने मुझे अपने

Doctor चिकित्सक ഡോക്ടർ Malayalam डोक्टर

संरक्षण में ले लिया,'' वह रुकी, आगे बोल न सकी। ''वह यहाँ आने का अपना रास्ता खुलने तक तेईस वर्षों तक वर्तमान में रहा। वह वहाँ सरकस में काम करता था। एक सनकी प्रदर्शक के तौर पर कि कुछ लोग आ सकें व चमत्कार को इंगित कर सकें। बिना किसी विचार के कि उनके समक्ष खड़े प्राणी के पास दिल है जो महसूस कर सकता था और आँखें जो दूर तक नहीं देख सकती थीं।''

''तो अब क्या हुआ?'' एक लंबे अंतराल के बाद मैंने पूछा। मुझे कुछ जानलेवा सा प्रतीत हुआ। मेरा डर गायब हो गया। अगर मृत्यु मेरी प्रतीक्षा में है तो मैं उस तक जाऊँगा। मैं अचानक पागलों की तरह प्रसन्न था।

''तुम मुस्कुरा क्यों रहे हो?'' मयूरी ने पूछा।

''वास्तव में, मुझे नहीं मालूम,'' मुँह में और ज़्यादा मुस्कुराते हुए मैंने कहा। मैंने एक मज़ेदार काल्पनिक कहानी के एक चरित्र जैसा महसूस किया। एक सनकी लेखक द्वारा तैयार किया गया। केवल इस बार कहानी ऐसे खत्म नहीं होगी ''ओह, यह सब तो एक सपना था!''

मयूरी मुस्कुराई। ''तुम निश्चित रूप से सुरक्षित रहोगे। मैं वादा करती हूँ।''

''कैसे संभव है?''

''मैं सभा से बात करूँगी।''

''तुम यह करने के लिए क्यों इतने प्रयत्नों के साथ कोशिश कर रही हो?''

''तुम अब भी मुझ पर विश्वास नहीं करते, क्यों है न लड़के? बहुत अच्छा। मेरे पास अपने कारण हैं। किसी को अपना कर्ज़दार रखना हमेशा लाभदायक होता है।''

मैं समझ नहीं सका कि उसका क्या मतलब है। लेकिन मुझे थोड़ा और लंबा जीवन मिल गया।

''कुछ एक घंटों में सूर्योदय हो जाएगा। मैं चाहती हूँ कि तुम डोडो जोड़े के साथ रहो जब तक कि मैं तुम्हें संदेश न भेजूँ,'' मयूरी ने कहा।

''और?''

''सभा तुम्हारी तरफदारी नहीं करेगी। लेकिन मैं उसे बदल सकती हूँ। याद रखो, मैं अब भी एक हूँ?''

''मेरे दादा जी और उनका कुत्ता?'' मैंने पूछा

''मैं उनकी भी सुरक्षा करूँगी,'' उसने कहा।

हवा उसके बालों को बिखराते हुए चली। चाँद ने उसके चेहरे को स्वार्गिक प्रकाश में नहला दिया। उसकी दुखद सुंदरता ने मुझमें दया और भय का अद्भुत मेल जगा दिया। मैंने सिर हिलाया। मैं स्वयं को उसके एहसान तले रख दूँगा।

(आगे है)

- सौम्या राजेन्द्रन

Doctor	चिकित्सक	ᱰᱟᱠᱛᱟᱨ	Santali	डाक्तोर

उदीयमान सितारा

उपलब्धियाँ

- सर्वाधिक परिष्कृत गोल्फर हेतु भारतीय गोल्फ यूनिअन लेडीज़ सैक्शन कन्वेनर पुरस्कार (२००७)
- चण्डीगढ़ शौकिया गोल्फ चैंपियनशिप ट्रॉफी विजेता (यू.१५वर्ग) (२००९)
- चण्डीगढ़ लेडीज़ गोल्फ चैंपियनशिप-बावा गिल ट्रॉफी विजेता (२००९)
- ९२ वाँ अखिल भारतीय लेडीज़ शौकिया गोल्फ चैंपियनशिप-ए वी एम ट्रॉफी विजेता (२००९)
- चण्डीगढ़ राज्यीय गोल्फ चैंपियनशिप विजेता (२००८)
- चण्डीगढ़ लेडीज़ चैंपियनशिप-चैलैंज बाउल एवं बावा गिल ट्रॉफी विजेता (२००८).

जयप्रीत घुमान

जयप्रीत घुमान, चण्डीगढ़ की छोटी सी गोल्फर ने १२ वर्ष की उम्र में गोल्फ की दुनिया में कदम रखा। उसके माता-पिता भी व्यावसायिक गोल्फर थे, निश्चय ही इस बात ने उसकी बहुत मदद की - उन्होंने उसका मार्गदर्शन किया और जब भी आवश्यकता हो उसकी सहायता करते हैं। उसने सी जी ए हीरो हौन्डा गोल्फ अकादमी चण्डीगढ़ में कोच, जीसस ग्रेवाल के निर्देशन में अभ्यास किया। कुछ ही वर्षों में उसने दिखा दिया कि वह गोल्फ कोर्स पर क्या कर सकती है।

''अगर आप पूरी दृढ़ता से कोशिश नहीं करते हैं, अगर आप स्वयं को सीमा तक पहुँचने के लिए मजबूर नहीं करते हैं तो आप अपनी संपूर्ण सामर्थ्य पर अपनी पकड़ की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?'' यह है जयप्रीत का खेल दर्शन। उसका विश्वास है कि कोई भी खिलाड़ी पूर्ण नहीं होता वहाँ हमेशा सुधार की गुंजाइश रहती है।

यद्यपि एक व्यावसायिक गोल्फर के तौर पर नहीं जयप्रीत एक शौकिया खिलाड़ी की तरह खेलना चाहती है और एक दिन भारत का प्रतिनिधित्व करना चाहती है! ''अपने सपनों की राह पर चलो, जिस खेल को आप चाहते हो और पसंद करते हो, वह खेलों क्योंकि यह ज़िंदगी किसी और चीज़ के लिए बहुत छोटी है!'' यह उसका संदेश सभी खेल प्रेमियों तक जाता है।

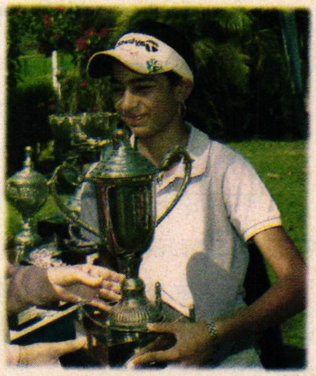

छोटी सी गोल्फर और इस माह की उदीयमान सितारा को *चन्दामामा* की बहुत-बहुत शुभ-कामनाएँ!

Doctor चिकित्सक वैद्यः Sanskrit वैद्यः

समाचार झलक

रसायन में नोबल

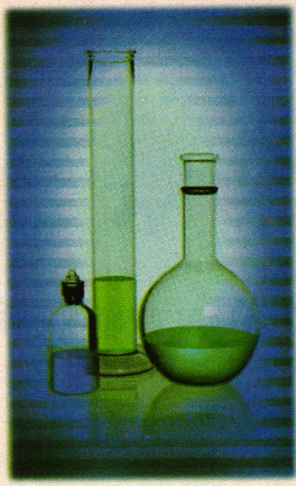

Image Courtesy: http://freedigitalphotos.net

वैंकटरामन रामकृष्णन (५७), एक भारतीय मूल के अमरीकी ने इस वर्ष याले यूनिवर्सिटी के टॉमस ए स्टीट्ज़ तथा इज़्राइल में साइन्स इन्स्टीट्यूट वेज़्मैनन के ऐडा ई योनथ के साथ रिबोसोम नामक कोशिका की रचना तथा कार्यों पर उनके अध्ययन हेतु रसायन नोबल पुरस्कार साझेदारी में प्राप्त किया।

वैंकटरामन ने बड़ौदा मैडिकल कॉलेज की जगह को अस्वीकार कर दिया और उसके बजाय भौतिकी में प्रवेश लिया। भौतिकी से स्नातक होने के उपरान्त वे जीव विज्ञान में कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से स्नातकोत्तर करने तथा ओहिओ यूनिवर्सिटी से पीएचडी करने चले गए। यह नोबल पुरस्कार धारक एक बहुत ही साधारण व्यक्ति है। उसके पास कार नहीं है वह साइकिल से काम पर जाता है।

सबसे बड़ा सामूहिक विवाह

एक वैवाहिक कार्यक्रम बहुत ही परेशानियों से भरा होता है... लेकिन क्या आप ७,५०० विवाहों के एक साथ संपन्न होने की कल्पना कर सकते हैं? हाल ही में दक्षिणी कोरिया में यूनिफिकेशन गिरजाघर द्वारा आयोजित एक समारोह में दक्षिणी कोरिया तथा समुद्र पार के जोड़ों ने विवाह की रस्में संपन्न कीं। यह बड़ा सामूहिक समारोह विवादस्पद गिरजाघर के ८८ वर्षीय बूढ़े संस्थापक रीवरेण्ड सन म्युंग मून द्वारा प्रबंधित किया गया। रस्म के दौरान मून अँगूठियाँ बदलते जोड़ों पर पवित्र जल छिड़कते रहे। नए जोड़ों को आशीर्वाद देने के बाद वे उन्हें सफेद कागज़ के फूलों की बौछार के मध्य ले गए। बाहर के कार्यक्रमों के लिए बहुत सी वधुओं ने सफेद विवाह पोशाकें पहनी हुई थीं तथा वर टक्सीडो पोशाकों में थे।

Image Courtesy: http://freedigitalphotos.net

Room	कमरा	ᴗ᙮	Telugu	गदि

हँसते-हँसते हो जा लोटपोट

मनीष: तुम शादी क्यों नहीं कर लेते?

प्रेम: मैं एक आदर्श जोड़ी ढूँढ़ रहा हूँ।

मनीष: तो तुम्हें एक आदर्श लड़की नहीं मिली?

प्रेम: मुझे एक मिली।

मनीष: तब?

प्रेम: वह भी एक आदर्श जोड़ी ढूँढ़ रही थी।

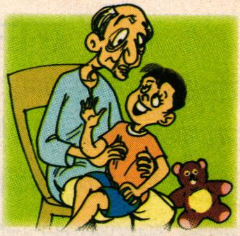

एक छोटा बच्चा अपने दादाजी की गोद में चढ़ा और पूछा, ''क्या मुझे भगवान ने बनाया है?''

''हाँ,'' दादाजी ने उत्तर दिया।

''क्या भगवान ने आपको भी बनाया?''

''हाँ,'' दादाजी ने कहा।

''ठीक,'' छोटा लड़का उनकी झुर्रियों पर हाथ फिराते हुए और उनके हल्के होते हुए बालों को देखकर बोला, ''आजकल वे बढ़िया काम कर रहे हैं!''

ग्राहक: तुम मुझसे रोज़ एक प्याला कॉफी के लिए पैसे लेते हो। कितना अच्छा होगा कि आज तुम मुझे मुफ्त में कॉफी पिलाओ।

वेटर: श्रीमान्, रोज़ आप भरे हुए प्याले से कॉफी पीते हैं। कितना अच्छा होगा आज आप एक खाली प्याले से कॉफी पी लें!

दत्तू

Room कमरा அறை Tamil अरै

हास्य-कथा

एक सवालिया सवाल

अकबर बादशाह शाही बगीचे में टहल रहे थे। बेगम उनके साथ में थीं। दोनों अपने चारों ओर फैले खूबसूरत फूलों का लुत्फ़ लेने के लिए वक्त लेते हुए पत्थरों की पगडंडी के किनारे धीमे-धीमे चल रहे थे।

''यह हवा एक चोर है,'' बादशाह ने दिल्लगी की।

''शहंशाह के होते हुए हवा ही यह गुनाह करने की गुस्ताखी कर सकती है और सज़ा से भी बच सकती है।'' बेगम मुस्कुराईं। ''यह अपने आपमें स्वर्ग है!'' वे भावावेश में बोलीं।

''अगर ज़मीन पर कहीं जन्नत है तो बेशक वह यहीं है।'' यह कहते हुए बादशाह ने नरमाई से उनका हाथ दबाया।

''और आप शहंशाह, इस ज़मीन पर सबसे आला हुक्मरान हैं,'' उन्होंने तारीफ़ की।

''बेग़म साहिबा, यह भी सच है। लेकिन आप मुझे मेरी लियाकत से कहीं ज़्यादा ज़ेब दे रही हैं। इसका श्रेय मैं अपने दरबारियों को देता हूँ। वे मुझे हर मौके पर सही राय देते हैं। उन्होंने मुझे ज़हमत में कभी भी नाकाम नहीं होने दिया। मेरे दरबार के जवाहरातों की ओर ज़रा ग़ौर तो फरमाइए। तानसेन दुनिया के सबसे ख़ास संगीतकार हैं। अपनी फौज के आलाकमान बेहतरीन राजपूत योद्धा, राजा मानसिंह को क्या मैंने नहीं पाया है? और जब दिमाग की बात आती है तो बीरबल की बराबरी का कोई है क्या?'' बादशाह ने स्वयं पर नाज़ महसूस करते हुए अपनी बेगम साहिबा से कहा।

''आपका दरबार, शहंशाह, वाकई जवाहरातों से जड़ा हुआ है लेकिन...'' बेगम की निगाह हरे घास के मैदान पर कूदते हुए एक टिड्डे पर टिक गई। ''कितना सब्ज़ दिखता है यह! अगर यह कूदे नहीं तो घास में इसे पहचान पाना किसी के लिए भी मुश्किल होगा।''

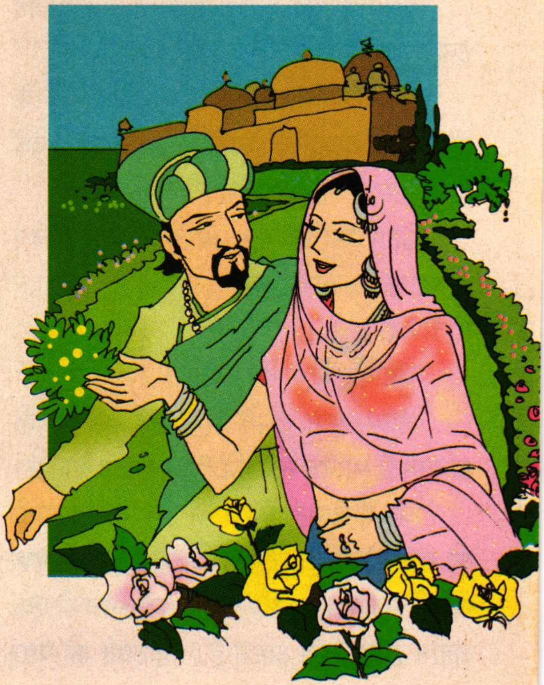

Room कमरा ঘর Bengali घर

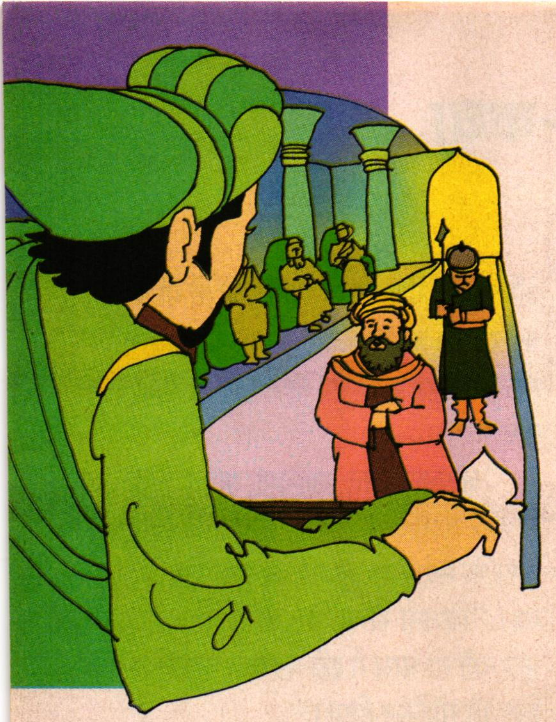

"इसीलिए यह कूदता रहता है," बादशाह उनसे पूछने से पहले हँसे, "तुमने कहा, लेकिन?"

"मुझे ग़लत मत समझिए। मैं सोचती हूँ कि आप अपने दरबारियों को ज़्यादा ही तरज़ीह देते हैं," बेगम ने फ़िक़रा कसा।

"आप ऐसा कैसे कह सकती हैं? क्या बीरबल से बढ़ कर अक्लमंद कोई इंसान है?" बादशाह ने तरफदारी की।

"मुमकिन है," वे हिचकीं।

"बेगम, क्या उसने पहले कई बार अपनी अक्लमंदी साबित नहीं की?" बादशाह ने पूछा।

"यह मैं जानती हूँ। मैं भी उसकी अक्लमंदी की कद्र करती हूँ। लेकिन मेरी बंदियों में से एक से मुझे मालूम हुआ कि पड़ोसी सल्तनत से एक ज़हीन इंसान यहाँ आया है। वह सभी को बता रहा है कि वह मुगल दरबार के सबसे चमकदार रत्न से कहीं ज़्यादा अक्लमंद है।"

"वह झूठ बोलता है," बादशाह पीछे पलटा।

"आपको इतना भरोसा कैसे है शहंशाह, जबकि आप उससे मिले ही नहीं? मैं जानती हूँ कि वह फाज़िल इंसान हरेक को यह भी कह रहा है कि वह अपना दावा साबित कर सकता है।" बेग़म ने चिढ़ाया।

"क्या वह कर सकता है? अपनी दासी के द्वारा उसे पैग़ाम भेजो कि वह कल शाही दरबार तशरीफ़ ले आए," बादशाह ने उनसे कहा। "हम उसका इम्तिहान लेंगे। तब ही हम जान पाएँगे कि क्या वाकई वह बीरबल से ज़्यादा अक्लमंद है।"

बेग़म ने अपना सिर हिलाया।

दरबारी शाही सुनवाई होने से बहुत पहले ही आ गए और इंतज़ार करने लगे। जब बादशाह ने अंदर कदम रखा उन्होंने बेहद अदब से सलाम किया और जल्दी ही दरबार की कारवाही शुरू हो गई।

आखिर में उन लोगों से मिलने का समय आया जो विशेषतौर पर बादशाह से मिलने के लिए आए थे।

एक संतरी अंदर आया, झुक कर सलाम किया और पड़ोसी देश से फ़ाज़िल के आने की मुनादी की। "शहंशाह, उसे शहंशाह से मिलने की दरकार है।"

बादशाह ने सिर हिलाया। संतरी वापस गया और एक नाटे कद के दरमियाना उम्र के आदमी,

Room कमरा खोली Marathi खोली

जिसके बाल भूरे हो रहे थे, की अगुवाई करते हुए लौटा। उसकी कुछ जगहों से चाँदी की तरह भूरी, लंबी लटकती हुई दाढ़ी थी। वह नीचे झुका, बादशाह को सलाम पेश किया और इंतज़ार करने लगा।

"शाही दरबार में आपका स्वागत है। मुझे बताइए, हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?" बादशाह ने मेहमान से शालीनता ज़ाहिर की।

"शहंशाह, मुझे बताया गया कि दुनिया के हर तरह से बेहतरीन लोग आपके दरबार में मौजूद हैं। क्या आपके दरबार में मेरे लिए कोई स्थान नहीं?" आदमी ने दरबारियों की ओर ग़ौर से देखते हुए घमंड से अपना सिर उठाया।

"आप सोचते हैं कि आप मेरे किसी भी दरबारी से कहीं ज़्यादा ज़हीन हैं।" बादशाह ने अपनी भौंह चढ़ाते हुए कहा। "मैं यह साबित करने के लिए तैयार हूँ, शहंशाह," वह आदमी झुका।

दरबारियों ने हाल में आए व्यक्ति की ओर एक तेज़ नज़र डाली। वे जानते थे कि शाही दरबार में सबसे बुद्धिमान बीरबल ही था। दरबारियों में केवल वही था जो हाज़िरजवाबी के युद्ध में विद्वान को हरा सकता था। बीरबल उन्हें तसल्ली देते हुए मुस्कुराया।

"बीरबल, तुम क्या कहते हो?" बादशाह ने सवाल किया।

"मैं आपके हुक्म का ताबेदार हूँ, आलमपनाह," बीरबल खड़ा हुआ और बादशाह की कदमबोसी की।

"मैं फ़ाज़िल मुहतरम से बातों की इस लड़ाई के लिए तैयार हो जाऊँगा, लेकिन पहले मैं यह जानना चाहता हूँ कि इस इम्तिहान को लेने का वह क्या तरीका अपनाते हैं।"

"मेरे पास सौ सवाल हैं हर एक पहले वाले से मुश्किल। मैं एक के बाद एक करके उन्हें पूछूँगा। अगर सभी सवालों के जवाब सही दिए गए तो मैं मान लूँगा कि आप मुझसे ज़्यादा समझदार नहीं तो कम से कम मेरे बराबर हैं।"

"सौ सवाल पूछने में वक्त बरबाद क्यों किया जाए? कैसा रहेगा कि आप मुझसे केवल एक सवाल पूछें। एक जो कि आप सोचते हैं सबसे मुश्किल है? वह एक जो आप मुझसे सबसे आखिर में पूछना चाहते हैं।"

"यह तर्कसंगत है," बादशाह ने कहा।

विद्वान ने कुछ देर गहराई से सोचा। वह इस

Room कमरा ಕೋಣೆ Kannada कोणे

स्थिति से कतई खुश नहीं था। लेकिन उसके पास कोई और तरीका नहीं था।

''ठीक है, तो मुझे बताओ - संसार में मुर्गी पहले आई कि अण्डा?''

यह एक चतुराई भरा सवाल था। निश्चित रूप से कौन कह सकता है कि कौन पहले आया? चूज़े अण्डे से बाहर आते हैं। चूज़े बड़े होकर मुर्गी बनते हैं या मुर्गा। मुर्गियाँ अण्डे देना शुरू करती हैं और जब अण्डे सेए जाते हैं तो चूज़े बाहर आते हैं। इसलिए बीरबल जो भी उत्तर देगा विद्वान उसे गलत कह सकता था।

हर कोई परेशान हो गया। यहाँ तक कि बादशाह भी! हरेक ने सोचा कि सवाल सबसे परे है यहाँ तक कि बीरबल भी जवाब नहीं दे सकता।

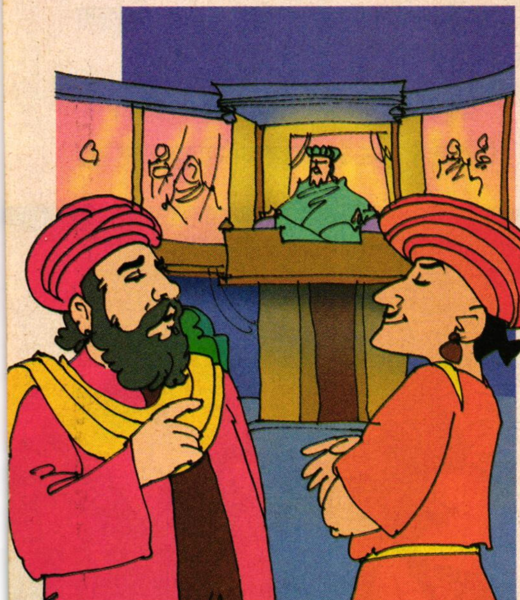

लेकिन बीरबल ने एक पलक भी नहीं झपकाई। वह बोला, ''चूज़ा पहले आया।''

''तुम कैसे जानते हो?'' फतह से भरी आवाज़ में उसने पूछा।

बीरबल भड़क उठा। ''क्या आप हमारी शर्तें भूल गए हैं?'' आँखों में चमक लिए उसने विद्वान से पूछा।

''कौन सी शर्त?''

''हम इस बात पर सहमत थे कि आप केवल एक सवाल पूछेंगे। केवल एक सवाल और ज़्यादा नहीं। जो आप जानते थे उनमें से आप ने सबसे मुश्किल सवाल पूछा और मैंने उत्तर दे दिया। आप मुझसे पूछते हैं कि मैं यह कैसे जानता हूँ कि चूज़ा पहले आया। यह एक सवालिया सवाल है। ओ फ़ाज़िल मुहतरम, मैं इस सवाल का जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हूँ,'' बीरबर ने चतुराई भरी खुशी से जवाब दिया।

फ़ाज़िल बुत बन गया। वह जान ही नहीं पाया कि क्या कहा जाए। उसे अपनी आवाज़ वापस लाने में थोड़ा वक्त लगा। वह बादशाह के सामने झुका फिर बीरबल के सामने और बोला, ''शहंशाह, मैं गलत था। आपके दरबार के लोग बेहतरीन हैं और इन सबमें बीरबल, वाकई, सबसे ज़हीन हैं।''

बादशाह ने विद्वान को सोने की मुहरों से भरा एक थैला दिया और उसे रुखसत किया। तब वह बीरबल की ओर मुड़ा, ''वाह! वाह! बीरबल, तुमने मेरे दरबार की इज्जत बचा ली। मैं तुम्हें क्या ईनाम दूँ?'' बादशाह ने बीरबल को देने के लिए सोने की मुहरों से खनकते दूसरे थैले को हाथ में उठा लिया।

Room	कमरा	କୋଠରି	Oriya	कोठरि

Log onto www.chandamama.com

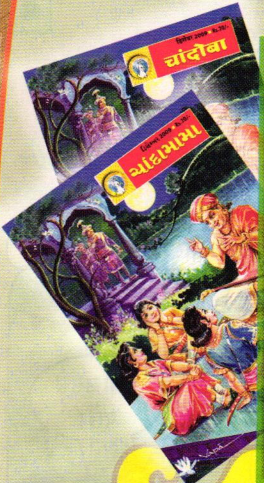

Your Chandamama is available in many avatars!

Regional Chandamama (9+ age group): Read your favourite stories in your own language! Chandamama takes you closer home even as your imagination soars!

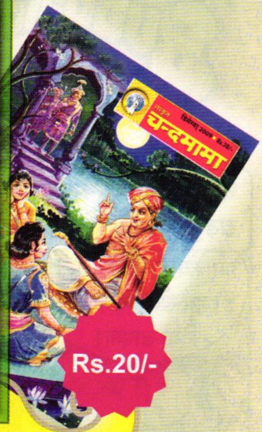

Rs.20/-

Your Language, Your Chandamama.

* Ramayana * Vikram-Vetal * Panchatantra * Arya

Available in 12 Languages:
Telugu, Hindi, Marathi, Oriya, Kannada, Bengali, Tamil, Malayalam, Gujarati, Assamese, Sanskrit, Santali

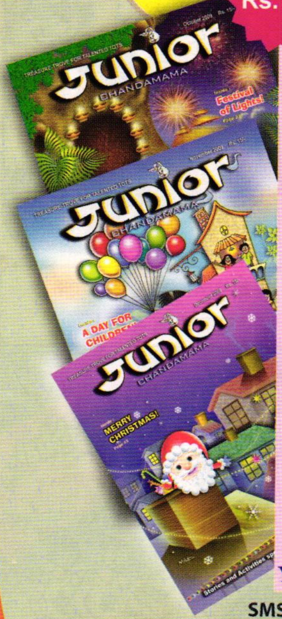

Rs.15/-

Junior Chandamama
(4+ age group):
A magazine for the little ones peppered with activities, pictures, and stories that will grip their imagination.

Make friends with **Mintoo, Gooba,** and a host of other whacky characters!

- **Picture story**
- **Puzzles & Crosswords**
- **Colouring**
- **Rebus**

You name it and it's got it!

Chandamama English
(9+ age group):
A children's magazine that has adapted itself to the changing needs of children across decades, Chandamama English offers you a delectable mix of the classic and the contemporary in 72 pages that value fun!

Rs.25/-

- **Sports**
- **Technology**
- **Contemporary stories**
- **Classics**

Revamped.
Redesigned.
Relevant. Read it!

SMS CSHOP to 54646 & we'll get in touch with you! Subscribe Now!

CHANDAMAMA (Hindi) December 2009 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CH(C)/217/09-11
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11